संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-20 अंक- 354
पृष्ठ 8
रविवार
15 सितम्बर 2024
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक–उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध– सिर में अंदरुनी चोट लगने...

विचार– सीताराम येचुरीः एक महत्वपूर्ण...

खेल– प्याज की कीमतों को कम करने के...

ज्ञानवापी साक्षात विश्वनाथ ही...लेकिन लोग दूसरे शब्दों में मस्जिद कहते हैं, सीएम योगी का बड़ा बयान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में शनिवार को ज्ञानवापी को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से आज ज्ञानवापी को लोग दूसरे शब्दों में मस्जिद कहते हैं, लेकिन ज्ञानवापी साक्षात भगवान 'विश्वनाथ' ही हैं।

गोरखपुर (एजेंसी)। गोरखपुर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने देश के चारों कोनों में आध्यात्मिक पीठों की स्थापना करने वाले आदि शंकर की काशी में की गई साधना के समय भगवान विश्वनाथ द्वारा ली गई परीक्षा के एक उद्धरण का उल्लेख करते हुए कहा कि दुर्भाग्य से आज जिस ज्ञानवापी को कुछ लोग मस्जिद कहते हैं, वह ज्ञानवापी साक्षात विश्वनाथ जी ही हैं। सीएम योगी शनिवार को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में 'समरस समाज के निर्माण में नाथपंथ का अवदान' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। यह दो दिवसीय संगोष्ठी गोरखपुर विश्वविद्यालय और हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की जा रही है। दीक्षा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री एवं नाथपंथ की अध्यक्षीय पीठ, गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने संतों और ऋषियों की परंपरा को समाज और देश को जोड़ने वाली परंपरा बताते हुए आदि शंकर का विस्तार से उल्लेख किया। कहा कि केरल में जन्मे आदि शंकर ने देश के चारों कोनों में धर्म–अध्यात्म के लिए महत्वपूर्ण पीठों की स्थापना की। आदि शंकर जब अद्वैत ज्ञान से परिपूर्ण होकर काशी आए तो भगवान विश्वनाथ ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। ब्रह्म मुहूर्त में जब आदि शंकर गंगा स्नान के लिए निकले तब भगवान विश्वनाथ एक अछूत के वेश में उनके सामने खड़े हो गए। आदि शंकर ने जब उनसे मार्ग से हटने को कहा तब उसी रूप में भगवान विश्वनाथ ने उनसे पूछा कि आप यदि अद्वैत ज्ञान से पूर्ण हैं तो आपको सिर्फ भौतिक काया नहीं देखनी चाहिए। यदि ब्रह्म सत्य है तो मुझमें भी वही ब्रह्म है जो आपमे है। हतप्रभ आदि शंकर ने जब अछूत बने भगवान का परिचय पूछा तो उन्होंने बताया कि मैं वही हूं, जिस ज्ञानवापी की साधना के लिए वह (आदि शंकर) काशी आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि ज्ञानवापी साक्षात विश्वनाथ स्वरूप ही है। सीएम योगी ने कहा कि भारतीय ऋषियों–संतों की परंपरा सदैव जोड़ने वाली रही है। इस संत–ऋषि परंपरा ने प्राचीन काल से ही समतामूलक और समरस समाज को महत्व दिया है। हमारे संत–ऋषि इस बात ओर जोर देते हैं भौतिक अस्पृश्यता साधना के साथ राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए बाधक है। मुख्यमंत्री ने कहा, अस्पृश्यता को दूर करने पर ध्यान दिया गया होता तो देश कभी गुलाम नहीं होता। संत परंपरा ने समाज में छुआछूत और अस्पृश्यता को कभी महत्व नहीं दिया। यही नाथपंथ की भी परंपरा है। नाथपंथ ने हरेक जाति, मत, मजहब, क्षेत्र को सम्मान दिया। सबको जोड़ने का प्रयास किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नाथपंथ ने काया की शुद्धि के माध्यम से एक तरफ आध्यात्मिक उन्नयन पर जोर दिया तो दूसरी तरफ समाज के हरेक तबके को जोड़ने के प्रयास किए। सीएम योगी ने कहा कि महायोगी गुरु गोरखनाथ जी की शब्दियों, पदों और दोहों में समाज को जोड़ने और सामाजिक समरसता की ही बात है। उनकी गुरुता भी सामाजिक समरसता को मजबूत करने के लिए प्रतिष्ठित है। यहां तक कि मलिक मुहम्मद जायसी ने भी कहा है, 'बिनु गुरू पंथ न पाइये, भूलै से जो भेंट, जोगी सिद्ध होई तब, जब गोरख सौं भेंट।' संत कबीरदास जी भी उनकी महिमा का बखान करते हैं तो गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं, 'गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग निगम नियोग सों।' सीएम योगी ने कहा कि संत साहित्य की परंपरा, इसकी श्रृंखला गुरु गोरखनाथ के साहित्य से आगे बढ़ती है। उन्होंने बताया कि पीताम्बर दत्त जी ने गोरखवाणी को संकलित किया और इसके लिए उन्हें हिंदी में डी. लिट् की उपाधि प्राप्त हुई।

पप्पू के बारे में... Noida के DM ने राहुल गांधी को लेकर ऐसा क्या पोस्ट किया, खुद ही फिर करवाई FIR

नई दिल्ली(एजेंसी)। कांग्रेस ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर की गई एक आपत्तिजनक और अनुचित गौतमबुद्ध नगर के डीएम के आधिकारिक हैंडल से विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की गई।

टिप्पणी को लेकर नाराजगी जाहिर की है। पार्टी ने पोस्ट के लिए जिम्मेदार अधिकारी के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग की है। विवाद के जवाब में जिला मजिस्ट्रेट मनीष वर्मा के एक्स हैंडल पर एक बयान जारी किया गया है। अपने बयान में उन्होंने दावा किया कि कुछ असामाजिक तत्वों ने उनके आईडी कार्ड का दुरुपयोग किया और आपत्तिजनक टिप्पणी पोस्ट कर दी। डीएम के बयान में आगे बताया गया कि कानूनी कार्रवाई की जा रही है, एफआईआर दर्ज की जा रही है और साइबर सेल मामले की जांच कर रही है। बाद में एफआईआर की एक प्रति एक्स हैंडल पर साझा की गई। दरअसल, कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत के एक ट्वीट पर सुप्रिया ने एक चौनल का वीडियो क्लिप शेयर किया था, जिसमें वह पीएम नरेंद्र मोदी पर राजनीतिक हमला बोलती नजर आ रही हैं। इस पर कॉमेंट करते हुए डीएम के हैंडल से लिखा गया– अरे तुम अपनी और अपने पप्पू के बारे में सोचो। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर जिले के क्ड के एक्स हैंडल से आज लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष पर बिल्कुल अनुचित और अस्वीकार्य टिप्पणी पोस्ट की गई है। यह कोई नया घटनाक्रम नहीं हैय पिछले दस वर्षों में भारत की नौकरशाही और अन्य गैर–राजनीतिक अधिकारियों का राजनीतिकरण बढ़ता गया है।

सार संक्षेप

यूपीएससी की याचिका पर पूजा खेडकर से जवाब, व्यास तहखाने की छत पर नमाज रहेगी जारी,

नई दिल्ली।(एजेंसी) यूपीएससी की याचिका पर पूजा खेडकर से हाई कोर्ट ने मांगा

जवाब। कोचिंग सेंटर में मौतों के मामले में दिल्ली HC ने CBI से जलभराव का कारण बताने को कहा। गांधी मैदान विस्फोट केस में 4 दोषियों की मौत की सजा उम्रकैद में तब्दील। केजरीवाल 177 दिन बाद जेल से बाहर, शराब नीति से जुड़े ब्ठप् केस में सुप्रीम कोर्ट से मिली जमानत। व्यासजी के तहखाने की छत पर नमाज रोकने से कोर्ट का इनकार। इस सप्ताह यानी 09 सितंबर से 14 सितंबर 2024 तक क्या कुछ हुआ? कोर्ट के कुछ खास ऑर्डर/जजमेंट और टिप्पणियों का विकली राउंड अप आपके सामने लेकर आए हैं। कुल मिलाकर कहें तो आपको इस सप्ताह होने वाले भारत के विभिन्न न्यायालयों की मुख्य खबरों के बारे में बताएंगे। दिल्ली हाई कोर्ट ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) की पूर्व परिवीक्षाधीन अधिकारी पूजा खेडकर से संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की उस याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें अदालत में कथित रूप से झूठा बयान और हलफनामा देने के लिए उनके खिलाफ कार्यवाही शुरू करने का अनुरोध किया गया है।

अब भारत को नसीहत भी देने लग गया बांग्लादेश का कट्टरपंथी जमात ए इस्लामी: सौहार्दपूर्ण रवैया

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत के खिलाफ बांग्लादेश साजिशों की एक नई प्रयोगशाला बनता जा रहा है। भारत के पड़ोसी देश में अब कई खतरनाक प्रयोग होने शुरू हो गए हैं। हालत ये हो गई है कि बांग्लादेश के कट्टरपंथी अब भारत पर बयान जारी कर रहे हैं। बांग्लादेश की सबसे बड़ी इस्लामी राजनीतिक पार्टी जमात–ए–इस्लामी ने अब कहा है कि ढाका और नई दिल्ली को क्षेत्र में शांति सुनिश्चित करने के लिए सौहार्दपूर्ण तरीके से मिलकर काम करना चाहिए। ढाका में एएनआई से विशेष रूप से बात करते हुए जमात–ए–इस्लामी के उप अमीर सैयद अब्दुल्ला मोहम्मद ताहेर ने कहा कि बांग्लादेश इस संबंध में हमेशा ईमानदार रहा है। किसी के पास अपने पड़ोसी को बदलने का विकल्प है। बांग्लादेश पार्टी नेता ने कहा कि इसीलिए सभी पड़ोसियों को अनुकूल सकारात्मक रवैया और माहौल बनाए रखना चाहिए ताकि पड़ोसी देशों के बीच शांति बनी रहे। 2013 में हाई कोर्ट के आदेश के बाद बांग्लादेश उच्चायोग द्वारा रजीस्ट्रेशन रद्द किए जाने के बाद जमात–ए–इस्लामी को चुनाव लड़ने से रोक दिया गया था। जमात ने आदेश के खिलाफ अपील की थी ।

जेल से बाहर आने के बाद पत्नी संग हनुमान मंदिर पहुंचे अरविंद केजरीवाल, बजरंगबली का लिया आशीर्वाद

सीएम अरविंद केजरीवाल ने अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल, पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया और आप सांसद संजय सिंह के साथ कनॉट प्लेस के हनुमान मंदिर में पूजा–अर्चना की।

नई दिल्ली(एजेंसी)। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल गई। कोर्ट ने उन्हें कुछ जरूरी शर्तों के साथ जमानत दी है। जमानत मिलने के बाद कल केजरीवाल तिहाड़ जेल से बाहर आ गए। जिसके बाद सीएम केजरीवाल आज पंत्नी सुनीता केजरीवाल संग कनॉट प्लेस स्थित प्रसिद्ध हनुमान दोपहर पहुंचे और वहां दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इस मौके पर पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया और आप सांसद संजय सिंह भी सीएम के साथ थे। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल को बेशक कथित आबकारी घोटाले में जमानत मिल गई है, लेकिन श्श्मुख्यमंत्रीश्श केजरीवाल अभी भी जेल में रहेंगे। सुप्रीम कोर्ट की तरफ से लगाई गई बंदिशों की वजह से केजरीवाल अभी बतौर मुख्यमंत्री काम नहीं कर सकेंगे। वह उन्हीं जरूरी फाइलों पर दस्तखत कर सकेंगे, जिनको उपराज्यपाल को भेजा जाना है। आप का मानना है कि कैबिनेट विस्तार समेत इसकी बैठकों के बारे में सुप्रीम अदालत से स्पष्टीकरण लेना पड़ेगा। वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने भी इशारा किया है कि इस बारे में वह अदालत का रुख कर सकते हैं। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल को सशर्त जमानत दी है। जेल से बाहर आने के बाद केजरीवाल मुख्यमंत्री कार्यालय व दिल्ली सचिवालय नहीं जा सकेंगे। वहीं, किसी भी सरकारी फाइल पर तब तक दस्तखत नहीं करेंगे, जब तक ऐसा करना जरूरी न हो। यह वही फाइलें होंगी, जिनको उपराज्यपाल के पास भेजा जाना है। इससे कैबिनेट बैठक, उसके विस्तार और दूसरे कामों को करने की इजाजत नहीं होगी। आप की लीगल टीम का भी मानना है कि मुख्यमंत्री के कामकाज पर अदालत ने बंदिशें लगाई हैं जबकि दिल्ली कैबिनेट का विस्तार लंबित है। पूर्व मंत्री राजकुमार आनंद के इस्तीफे के बाद कैबिनेट में एक पद खाली है। वहीं, कैबिनेट बैठक से तैयार होने वाले कैबिनेट नोट पर मुख्यमंत्री को दस्तखत करने होंगे। दूसरे और भी कई जरूरी काम हैं।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दिया जवाब, क्यों मिले थे मंगेश यादव के परिवार से?

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि मंगेश यादव के परिवार ने पुलिस से डर से अपना बयान बदला। मैंने सच्चाई जानने के लिए मंगेश के परिवार से मुलाकात की थी।

लखनऊ(एजेंसी)। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी पुलिस फर्जी एनकाउंटर कर रही है। मंगेश यादव को घर से उठाकर मारा गया था। मैं सच्चाई जानने के लिए उनके परिवार से मिला था। उन्होंने आरोप लगाया कि यूपी पुलिस साजिश करने और एनकाउंटर करने का काम कर रही है। पुलिस को दिए गए मंगेश के परिवार के बयान पर उन्होंने कहा कि पुलिस के डर से कोई भी कुछ भी बयान दे सकता है। अखिलेश यादव शनिवार को मीडिया को संबोधित कर रहे थे। सपा मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने हिंदी दिवस के अवसर पर साहित्यकारों, कवियों और पत्रकारों को सम्मानित को सम्मानित किया। अखिलेश यादव से जब पूछा गया कि अयोध्या में संतों ने उनके बयान पर नाराजगी जताई है। अखिलेश यादव ने कल आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में बयान दिया था कि मठाधीश और माफिया एक ही जैसे होते हैं। इस उन्होंने कहा कि जब किसी नेता ने नारा दिया था कि ... इनको मारो जूते चार तो इन लोगों ने क्यों नाराजगी नहीं जताई थी। अखिलेश यादव ने कहा कि सपा–बसपा का गठबंधन देश की राजनीति को बदलने वाला था लेकिन हमें धोखा मिला। ये बात बहुत छोटी है कि किसने किसका फोन नहीं उठाया। जिस समय मुझे गठबंधन टूटने की सूचना मिली उस समय बसपा के एक नेता मेरे साथ मंच पर बैठे थे। मैंने उनसे पूछा कि गठबंधन क्यों तोड़ा? तो उन्होंने कहा कि हमें और आपको दोनों को धोखा मिला है। अखिलेश यादव ने कहा कि कश्मीर में 370 हटने के बाद पहली बार चुनाव हो रहे हैं। समाजवादी पार्टी वहां चुनाव लड़ रही है।

मेरी जीत ऐतिहासिक जीत थी, संघर्ष से मैं विचलित नहीं होता : सुशील सिन्हा

150 साल पुराने ट्रस्ट में 33514 सदस्य ही क्यों इस विषय पर विपक्ष मौन क्यों
ट्रस्ट को गुमराह करने वाले मुझे नसीहत न दें
पूरी ईमानदारी के साथ मैं अपने कर्तव्य मार्ग पर चलता चला जाऊंगा
एरिया बिगेस्ट ट्रस्ट के लिए बहुत सारी योजनाएं लाया हूं मैं
विपक्ष पर करारा प्रहार करते हुवे अध्यक्ष ने अपने आठ माह की गिनाई उपलब्धियां
न्यूनतम राशि से कायस्थ पाठशाला के बनाए जाने वाले नए सदस्यों का क्यों कर रहा है विपक्ष विरोध

सुधीर सिन्हा, प्रयागराज। महज साढ़े आठ महीनों में कायस्थ समाज के हितों के लिए मेरे द्वारा कराए जा रहे ताबड़ तोड़ कार्य को देख कर चंद विपक्षी लोग मुझे देखना पसंद नहीं कर रहे हैं और उनकी आंखों में मैं खटकने लगा हूं।यहीं नहीं एक दूसरे को नीचा दिखाने वाले लोग अब एक दूसरे से हांथ मिलाकर मुझे ही नीचा दिखाने का कुचक्र रच रहे हैं।बावजूद इसके में विचलित नहीं हूं और पूरी निष्ठा ,ईमानदारी के साथ अपने कार्य का निर्वहन कर रहा हूं । मैं न तो डरा हूं न रुका हूं, न ही रुकूंगा और न ही थकूंगा।कायस्थ पाठशाला के हित में निरंतर कार्य करता रहूंगा क्योंकि मैं कायस्थ परिवार के लिए एक एक सदस्य को जोड़ने के लिए कृत संकल्प हूं।मेरी जीत ऐतिहासिक जीत थी और में संघर्ष से विचलित नहीं होता।ये उद्गार हैं कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष डॉक्टर सुशील सिन्हा के जो शनिवार को एक स्थानीय होटल में मीडिया कर्मियों से रूबरू होकर उनके सवालों का जवाब दे रहे थे।उन्होंने अपने साढ़े आठ महीनों की अल्प अवधि में कराए गया विकास कार्यों को भी सभी के सामने खुलकर बताते हुवे विपक्षियों पर जमकर प्रहार करते हुवे संस्था के रूल्स की दो प्रतियों का हवाला देते हुवे कहा कि मेरे सत्तासीन होने के पूर्व के लोगों ने फर्जी रूल्स बनाकर आम जनता को भी ठगने का कार्य किया है उन्होंने एक तरह की दो प्रतियों को पटल पर रखते हुवे कहा कि 29अक्टूबर 2017के रूल्स में बदलाव है।एक तो जो रजिस्ट्रार सोसाइटी में 48ए जमा किया गया है और ठीक उसी की नकल से दूसरा आम जनता को बेवकूफ बनाने के लिए 48ए बनाया गया है जो पूरी तरह से फर्जी है।अब सवाल ये उठता है कि मार्च 2018 में भी ये रूल्स दिए गए हैं अब सवाल ये उठता है कि इनमे से सही कौन सा है।वहीं दो तरह के रूल्स समाज को देना गलत है।यही नहीं उन्होंने अपनी बातों को रखते हुवे कहा कि मैने जब जनवरी 2024 में कार्यभार ग्रहण किया और कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट का कायाकल्प करने में जुटा तो मेरी रह में रोड़ा अटकाने के लिए जीएस्टी का छापा डलवाया गया और तमाम सारे वित्तीय रिकार्डों को सीज कर दिया गया।यहीं नहीं केपी कॉलेज में 10लाख के बिजली का बिल बकाया होने के चलते बिजली तक काट दी गई।कई भवनों और संस्थानों में भारी गृहकर और जलकर बकाया होने के चलते नगर निगम ने इन्हें सीज करने की कार्यवाही कर दी।उन्होंने कहा कि लगभग 50 करोड़ का जलकर,गृहकर,बिजली का भुगतान की तलवार अभी लटक रही है।यही नहीं पूर्व अध्यक्ष में सी एम पी डिग्री कॉलेज,के पी कॉलेज,के पी कमयूनीटी की बिल्डिंग भी खस्ता हाल हो गईं।यही नहीं पूर्व अध्यक्ष ने चुनाव हारने के बाद बीते दिनों कायस्थ भवन के साथ ही छीतपुर की कई जमीनें लोगों को आबंटित करने का अनुबंध तक कर दिया। पूर्व अध्यक्षों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए गए इस कार्य के चलते वहां पर हो रहे अवैध निर्माण को महामंत्री एवम अन्य अधिकारियों ने अभी हाल प्रशासन ले मदद से रुकवाया गया।मेरे कार्यों में रुकावट डालने के लिए उन लोगों ने ट्रिब्यूनल ने चुनाव याचिका भी लगा दिया,उपजिलाधिकारी कोर्ट में भी हर तीसरे दिन इलेक्शन पिटीशन की तारीख लगवाई जाने लगी। बावजूद इसके मैं विचलित नहीं हुवा और विपरीत परिस्थितियों के बाद भी वर्तमान कार्यकारिणी के साथ अधिकांश साथियों के साथ मिलकर मैं अपने कार्य को अंजाम देने में पूरी शिद्दत के साथ जुटा हुवा हूं।कायस्थ पाठशाला के अध्यक्ष डॉक्टर सुशील सिन्हा ने विपक्ष को घेरते हुवे कहा कि पूर्व की कार्यकारिणी के अनेकों गलत फैसले लिए जिनके कारण विगत कई दशकों से गृहकर,जलकर,बिजली के बिल करोड़ों की संख्या में बकाया थे जिनकी वजह से नगर निगम द्वारा भवन सील किए गए उनकी बिजली कटी गई इन सबका मैने जब समाधान कर भवनों को छुड़ाया तो लोगों को बुरा लगने लगा।डॉक्टर सिन्हा यहीं नहीं रुके विपक्ष पर उन्होंने ताबड़ तोड़ हमले करते हुवे कहा कि कुछ लोगों ने अपने को कायस्थों का मसीहा मन लिया और अपने को मठाधीश समझते हुवे कास्थथ पाठशाला को अपनी मुठ्ठी में बंद कर रखा था बावजूद जनता ने बदलाव चाहा और मुझे इस बार अध्यक्ष के रूप में चुना ताकि मैं जानता की सेवा कर सकूं और कायस्थ पाठशाला में विद्यालय हो सके और कायस्थ पाठशाला शिक्षा के लिए जाना जाय न कि शादीघर के रूप में।सबसे महत्वपूर्ण विषय ये है कि प्रातः स्मरणीय मुंशी काली प्रसाद कुल भास्कर जी का जो वित्त एवम उद्देश्य था कि कायस्थ समाज के लिए उत्तम शिक्षा व्यवस्था के साथ ही समाज की विधवाओं को आर्थिक मदद के साथ ही जो गरीब और शोषित थे उनके बच्चों को पढ़ाई के दौरान छात्र मिल सके इसके लिए में समस्त कायस्थ समाज को जोड़ने का पूरा प्रयास कर रहा हूं।अपने ऊपर लगाए गए सभी आरोपों को इन्होंने सिरे से खारिज करते हुवे कहा कि विपक्ष जानबूझकर मेरे कार्यों में रुकावट डालने के उद्देश्य से उल्टे सीधे आरोपों को लगा रहा है जो बेबुनियाद हैं।मेरे साढ़े आठ माह के कार्यकाल में लगभग 500 लोगों को सदस्य भी बनाया जा चुका है इसके साथ ही ट्रस्टियों के लिए चित्रगुप्त धर्मशाला के निर्माण कार्य के लिए एम एल सी डॉक्टर के पी श्रीवास्तव ने 10 लाख रुपए देकर प्रारंभ कराया,कायस्थ पाठशाला को यूनिवर्सिटी का दर्जा मिल सके इसके लिए लखनऊ में शिलान्यास कराया गया,एक बड़े मल्टी स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के निर्माण के लिए सी एम पी के सामने वाली जमीन को खाली करने का कार्य प्रगति पर है।इन सब के साथ बहुत सारी योजनाएं पर कार्य शुरू करा दिया गया है।इन सब प्रगति को विपक्ष पचा नहीं पा रहा है और अब मेरे ही खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर लोगों से हस्ताक्षर करवाया जा रहा है क्योंकि येक्सब नहीं चाहते कि ट्रस्ट

आमलोगों का हो क्योंकि ट्रस्ट को ही इन लोगों ने अपनी रोजी रोटी बना रखी थी।इन्होंने उपस्थित लोगों से अपील करते हुवे कहा कि मुझे आप लोगों का आशीर्वाद चाहिए ताकि मैं सच्चाई के मार्ग पर चलते हुवे समस्त कुचक्रो से मोर्चा ले सकूं और कायस्थ पाठशाला को उत्तम प्रबंध से मुंशी काली प्रसाद सहित सभी दान दाताओं की इक्षा के अनुरूप जन सेवा में अपना शेष जीवन अर्पित कर सकूं।

बेहतरीन सोच ने अपने समाज के लोगों की भलाई के लिए प्रयागराज में एक शैक्षणिक समिति का गठन कर समाज ही नही बल्कि देश के बच्चों का भविष्य संवारने के लिए जिस ट्रस्ट की स्थापना की थी वो एशिया का कायस्थ समाज का सबसे बड़े ट्रस्ट ष्कायस्थ पाठ शाला ट्रस्टष् है जो अब शायद हितैषी गुटबाजी का शिकार हो गया है।वहीं 18मतों के अंतर से चुनाव जीत कर डॉक्टर सुशील सिन्हा इस बार ट्रस्ट के अध्यक्ष चुने गए। अध्यक्ष बनने के बाद डॉक्टर सुशील सिन्हा ने समाज के उत्थान को लेकर कुछ बेहतर प्लान बना कर उसे अमल में लाने का कार्य शुरू ही किया था कि विपक्षी खेमा इनकी कार्य शैली को लेकर नाराज हो उठा।बावजूद इसके एकला चलो की तर्ज पर वो बिना किसी की प्रवाह किए अपने कार्य को अंजाम देने में लगे रहे।वहीं अध्यक्ष की कार्यशैली पर सवालिया निशान लगाते हुवे कायस्थ पाठशाला के पूर्व महामंत्रीध वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने बुधवार को बकायदा प्रेस कांफ्रेंस करके अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की बात कही।उनका कहना है कि मेरे परिवार ने कायस्थ पाठशाला के विकास को लेकर 13सालो से विकास कार्य को किया है इन्होंने साफ किया कि रूल 51के तहत केपी कम्यूनिटी सेंटर,मेजर रंजीत सिंह स्पोर्ट्स कांप्लेक्स की एक प्रबंध समिति के गठन का प्राविधान है,जिसमे पिछले अध्यक्ष चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह और वातमान अध्यक्ष डॉक्टर सुशील सिन्हा और महामंत्री संयोजक के रूप में नामित होने चाहिए मगर चुनाव संपन्न हुवे आठ से नौ माह बीत गए ये कार्य नहीं हो पाया।

इन्होंने आरोप लगाते हुवे कहा कि यही नहीं नियम 49 के तहत पूर्व अध्यक्ष और महामंत्री कायस्थ पाठशाला की कार्यकारिणी के न केवल आजीवन सदस्य होंगे बल्कि हर प्रस्ताव के पूर्व उनके अनुभवों के तहत मत देने का अधिकार भी है परंतु किसी भी पूर्व अध्यक्ष को कार्यकारिणी के आयोजन की न तो कोई जानकारी दी जाती है और न ही कोई एजेंडा भेजा जाता है बस मनमाने तरीके से कार्य किया जा रहा है।मीडिया कर्मियों को जानकारी देते हुवे कुमार नारायण ने कहा कि कायस्थ पाठशाला न्यास दो दानवीरों का इतिहास है और दान ही इसका मुख्य आय का साधन है आज इसको समाप्त किए जाने की कोशिश की जा रही है।जिससे लोगो में रोष व्याप्त है।

ख11ध09, 7रू17 च्ड, "नकीपत" पदींरू बॉक्स मैटर इसी के साथ लगेगा।

वहीं इस विषय को लेकर जब डॉक्टर सुशील सिन्हा से वार्ता की गई तो उन्होंने जानकारी देते हुवे बताया कि डेढ़ सौ साल पुराने इस ट्रस्ट में आज मात्र 33514लोग ही मेंबर बनाए जा सके हैं।इसका एक मात्र कारण शायद लोगों को साथ नहीं लेकर चला गया।इसके चलते आज कायस्थ पाठशाला के हितेषी खुद ही गुट बाजी का शिकार हो गए हैं।यहीं नहीं डॉक्टर सिन्हा का साफ कहना है कि मैने कास्यस्थ समाज की भलाई के लिए जो कदम उठाया है उससे पीछे नहीं हटूंगा क्योंकि मैने उनके बीच जाकर उनकी समस्याओं को जाना है और उनके लिए ही बेहतर कार्ययोजनाओ को अमली जामा पहनाया जा रहा है।उन्होंने जानकारी देते हुवे कहा कि एक बड़े अस्पताल के प्रोजेक्ट पर कार्य चल रहा है ताकि जो ट्रस्ट के सदस्य हैं उनका उचित रेट यानी 50:के खर्चे पर इलाज सुलभ हो सके यही नहीं एक डायग्नोस्टिक सेंटर भी समाज के लोगों के साथ ही अन्य लोगों की भलाई के लिए बनाया जा रहा है।बच्चों की बेहतरीन शिक्षा के लिए एक नए सी बी एस सी बोर्ड का स्कूल खुलने जा रहा है इनके साथ ही कई अन्य कार्य हैं जिस पर कार्य चल रहा है।बावजूद इसके कुछ लोग सिर्फ राह में रोड़ा अटकाने का कुचक्र रचने में लगे हुवे हैं जिनकी मैं परवाह नही करता।इनका भी साफ कहना है कि जितने भी दिनों तक अपने पद पर रहूंगा पूरी ईमानदारी के साथ अपने कार्य को अंजाम देता रहूंगा।

रविंद्र मांदड़ अब प्रयागराज के नए DM: जनवरी में होने वाला दुनिया का सबसे बड़ा मेला महाकुंभ कराने की होगी जिम्मेदारी

प्रयागराज। जौनपुर के क्ड रविंद्र मांदड़ अब प्रयागराज के नए डीएम बनाए गए हैं। देर रात कई आईएएस अफसरों के ट्रांसफर हुए। इसमें प्रयागराज के भी डीएम बदले गए हैं। नए डीएम के रूप में चार्ज लेने के बाद प्रयागराज में सबसे बड़ा आयोजन कुछ ही महीने बाद संगम के तट पर आयोजित होने जा रहा है। दुनिया का सबसे बड़ा महाकुंभ कराने की जिम्मेदारी अब नए डीएम के ऊपर होगी। बताया जाता है कि रविंद्र कुमार मांदड़

सीएम योगी आदित्यनाथ के विश्वसनीय अफसरों में से एक हैं। यहां के निवर्तमान जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल को अब आजमगढ़ का जिलाधिकारी बनाकर भेजा गया है। वह तीन सितंबर को 2023 को आगरा से प्रयागराज भेजे गए थे। PDA (प्रयागराज विकास प्राधिकरण) के उपाध्यक्ष अरविंद कुमार चौहान को अब शामली जनपद का जिलाधिकारी बनाकर भेजा गया है। जबकि अमित पाल को प्रयागराज विकास प्राधिकरण का उपाध्यक्ष बनाया गया है। अमित पाल मेरठ के नगर आयुक्त पद से यहां भेजे गए हैं।

प्रयागराज में संगम पर टूटी-पुलिया में फंसा श्रद्धालु का पैर: महाकुंभ की तैयारियों पर उठे सवाल, अस्थि विसर्जन के लिए आया था युवक

प्रयागराज। प्रयागराज के संगम क्षेत्र में रीवा से अस्थि विसर्जन के लिए आए युवक का पैर कमर बराबर बाढ़ के पानी में टूटी पुलिया में फंस गया। काफी मशक्कत के बाद उसका पैर नहीं निकला। चीख पुकार के बाद जल पुलिस ने मदद को पहुंची। पुलिया का एक हिस्सा तोड़ा गया। तब जाकर युवक का पैर निकला। उसे निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां उसे 10 टांके लगे हैं। श्रद्धालुओं के साथ रहे लोगों ने इसका वीडियो बना लिया जो बाद में वायरल किया गया। इस हादसे के बाद से महाकुंभ को लेकर चल रही तैयारी को लेकर सवाल खड़े हो रहे है। रीवा के डभौरा हरदौली के रहने वाले 21 वर्षीय हिमांशु सेन प्रतियोगी छात्र हैं। वह शुक्रवार को अपने मामा राजीव, भाई प्रियांशु समेत 7 लोगों के साथ कार से संगम अपनी नानी के अस्थि विसर्जन के लिए आए थे। कार किनारे खड़ी कर वह बाढ़ के पानी से होकर संगम पहुंचे। वहां अस्थि विसर्जन होने लगा। इसी बीच हिमांशु पैदल कुछ सामान लेने के लिए हनुमान मंदिर के पास खड़ी कार के पास आने लगे। रास्ते में उनका एक पैर फंस गया। कमर के ऊपर तक पानी भरा होने के चलते वह नीचे हाथ डालकर पैर निकाल नहीं पा रहे थे। असल में संगम नोज पर जगह जगह जेटी और पुलिया बनाई गई है। उसके लिए छोटे छोटे खंभे बने हैं। उसी में श्रद्धालु का पैर फंस गया था। दुकानदार, तीर्थ पुरोहित आदि मदद के लिए पहुंचे लेकिन पानी के भीतर जाकर पैर निकालना असंभव था। कंट्रोल रूम की सूचना पर पुलिस और जल पुलिस पहुंची लेकिन फिर भी सफलता नहीं। जेसीबी पहुंची और पैर के अगल–बगल टूटी पुलिया के हिस्से को और तोड़ा तो तब जाकर हिमांशु बाहर निकल पाए। पैर बुरी तरह जख्मी हो गया। निजी अस्पताल में इलाज के बाद परिजनों के साथ गांव चले गए।

कुंभ मेले में संचालित होंगी अमरोहा डिपो की 50 बसें

प्रयागराज। अमरोहा। अगले साल प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ मेले के दौरान अमरोहा डिपो की 50 बसें प्रयागराज से गोरखपुर मार्ग पर संचालित होंगी। कुंभ मेले के दूसरे चरण में डिपो की बसों को प्रयागराज भेजा जाएगा। डिपो को 20 नई बसों की सौगात मिलने की भी उम्मीद है। हालांकि डिपो की बसों को कुंभ मेले में संचालित किए जाने से स्थानीय यात्रियों को बसों की किल्लत का सामना करना पड़ सकता है। कुंभ मेले में श्रद्धालुओं की सुविधा के मद्देनजर राज्य सड़क परिवहन निगम अधिकारियों ने अभी से तैयारी शुरू कर दी हैं। परिवहन निगम सात हजार से ज्यादा कुंभ स्पेशल बसें इस दौरान संचालित करेगा। गौरतलब है कि साल 2025 में 13 जनवरी से 27 फरवरी तक कुंभ मेला आयोजित होगा। तीन चरणों में मेले को विभाजित किया गया है। पहला चरण 12 से 23 जनवरी, दूसरा चरण 24 जनवरी से सात फरवरी व तीसरा चरण आठ फरवरी से 27 फरवरी तक रहेगा। मुख्य स्नान की तिथि 13 जनवरी, 14 जनवरी, 29 जनवरी, तीन फरवरी, 12 फरवरी, 26 फरवरी रहेगी। मुख्य स्नान पर्व मौनी अमावस्या पर 29 जनवरी को रहेगा। अमरोहा डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक मोहम्मद शफी के मुताबिक मेले में पहले चरण में 3050 व दूसरे चरण में 7000 बसें संचालित की जाएंगी। अमरोहा डिपो की 50 बसें भी मेले में संचालित रहेंगी। डिपो की बसों को प्रयागराज–गोरखपुर मार्ग पर संचालित किया जाएगा। रूट निर्धारित कर दिया गया है। बसों को तैयार कराया जा रहा है। जनवरी में स्टाफ के साथ बसों की रवानगी कर दी जाएगी। बताया कि इसके अलावा डिपो से 20 नई बसों की मांग भी हेड क्वार्टर को भेज दी गई है। जल्द बसें डिपो मिल सकती हैं। गौरतलब है कि डिपो से फिलहाल 86 बसें विभिन्न मार्गों पर संचालित हैं। इनमें से 15 बसें संचालन की मियाद पूरी कर चुकी हैं। इन बसों के स्थान पर डिपो को जल्द नई बसें मिलने की उम्मीद है।

दो साल बाद फिर बढ़ी सैनिक स्कूल के लिए सक्रियता

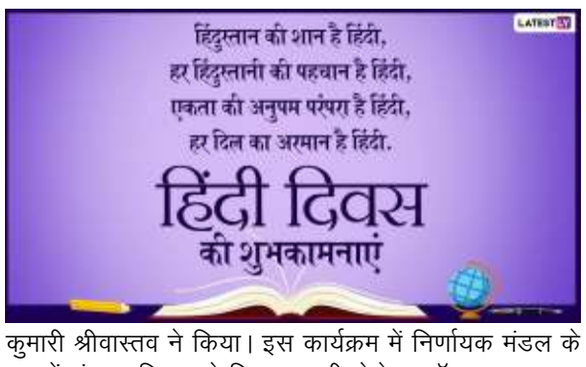

प्रयागराज। प्रदेश के सभी मंडल मुख्यालयों में सैनिक स्कूल खोलने के लिए ढाई साल बाद फिर से सक्रियता बढ़ी है। महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा ने 12 सितंबर को आगरा, अलीगढ़, प्रयागराज, आजमढ़, बरेली, बस्ती, मुरादाबाद, बांदा, झांसी, गोंडा, अयोध्या, कानपुर नगर, मेरठ, सहारनपुर, मिर्जापुर और वाराणसी के जिलाधिकारियों को पत्र लिखकर राजकीय, सहायता प्राप्त, निजी विद्यालय या एनजीओ आदि को सैनिक स्कूल में परिवर्तित करने का प्रस्ताव मांगा है। इससे पहले जनवरी 2022 में भी प्रस्ताव मांगा गया था। उसके बाद से अब तक सिर्फ गोरखपुर में सैनिक स्कूल की स्थापना हो सकी है जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने छह सितंबर को किया था। इसके अलावा अन्य 16 जिलों में कोई ठोस पहल नहीं हो सकी है। केंद्र सरकार ने दो साल पहले बजट में देशभर में 100 सैनिक स्कूल पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप) मॉडल पर खोलने की घोषणा की थी। गोरखपुर के अलावा लखनऊ और मैनपुरी में सैनिक स्कूल पहले से संचालित हैं। सैनिक स्कूल की स्थापना से सैन्य सेवाओं में जाने के इच्छुक युवाओं का सपना साकार होगा। सैनिक स्कूल का उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) के लिए तैयार करना होता है।

महाविद्यालय में हिंदी दिवस पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

नैनी, सप्रयागराज। में हिंदी दिवस के अवसर पर छात्र–छात्राओं के लिए एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता का विषय था शविश्व भाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदमश।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रोफेसर (डॉ) ओम प्रकाश जी ने की। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत हिंदी विभाग की विभाग प्रभारी प्रोफेसर (डॉ)सविता

कुमारी श्रीवास्तव ने किया। इस कार्यक्रम में निर्णायक मंडल के रूप में संस्कृत विभाग के विभाग प्रभारी प्रोफेसर डॉ श्याम नारायण यादव और मनोविज्ञान विभाग के विभाग प्रभारी प्रोफेसर डॉ महेंद्र प्रसाद जी रहे। इस कार्यक्रम में छात्र– छात्राओं ने अधिक संख्या में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर गौसिया बानो बी ए तृतीय सेमेस्टर, द्वितीय स्थान पर हर्ष तिवारी बी ए पंचम सेमेस्टर और तृतीय स्थान पर विशाल सिंह बी ए पंचम सेमेस्टर रहे। इस कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित अतिथियों ने अपने वक्तव्य में हिंदी के अधिकाधिक और शुद्ध प्रयोग पर बल दिया और यह बताया कि हिंदी धीरे–धीरे वैश्विक स्तर की भाषा बन रही है।हमें हिंदी के को अपने दैनिक जीवन में प्रयोग में लाना होगा तभी हमारा हिंदी दिवस मनाने का यह उद्देश्य सार्थक हो सकेगा।कार्यक्रम का संचालन बी ए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा गौसिया बानो ने किया और धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ अर्चना राय ने किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापिका गृह विज्ञान विभाग की विभाग प्रभारी प्रोफेसर नीतू सिंह डॉ भास्कर शुक्ला, डॉ अमित मिश्रा, डॉ निरुपमा यादव, डॉ मंजरी मिश्रा, डॉ नूर फातिमा समेत समस्त अध्यापक उपस्थित रहे।

सभी के संयुक्त प्रयास से हिन्दी की लोकप्रियता बढ़ी : डॉ0 शीला सिंह

हिन्दी दिवस पर गोष्ठी एवं कवि गोष्ठी आयोजित

मिर्जापुर। हिन्दी दिवस पर स्वामी विवेकानन्द शिक्षा समिति के तत्वावधान में नगर के बुन्देलखण्डी मोहल्ले में विचार गोष्ठी एवं कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि ज्ञानन्दा एकेडेमी की डायरेक्टर डॉ शीला सिंह थी। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार गणेश गम्भीर ने की। अपने वक्तव्य में डॉ शीला सिंह ने कहा कि आज हिन्दी की लोकप्रियता इसलिए बढ़ी है क्योंकि सभी क्षेत्रों के लोगों ने इसके लिए सयुक्त रूप से प्रयास किया। श्री गणेश गम्भीर ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी की लोकप्रियता के बावजूद उसे राष्ट्र भाषा का दर्जा नहीं मिल पाया जो कि दुरूखद है।

इस दौरान आयोजित कवि गोष्ठी में नगर के अनेक वरिष्ट कवियों ने अपनी वैचारिक रचनाओं से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

कवि गोष्ठी का शुभारंभ पूजा यादव की सरस्वती वन्दना से हुआ। गणेश गम्भीर ने सुनाया–शसमरसता–सद्भाव का, देती है संदेश। एक सूत्र में बाँधती, हिन्दी पूरा देश।। लल्लू तिवारी ने सुनाया– श्प्यार पाने में वक्त लगता है, घर बनाने में वक्त लगता है। वक्त आएगा इन्तजार करो, वक्त आने में वक्त लगता है।। भोलानाथ कुशवाहा ने सुनाया– शरोशनी बहुत है रास्ते में मेरे, क्या करूँ पैर मेरा फिसलता है।श केदार नाथ सविता ने सुनाया– श्फूल और डाल का साथ बस माली के आने तक है। तट और नाव का साथ बस माझी के आने तक है। अच्छा है हम न करें किसी तरह के वादे। तुम्हारा और मेरा साथ बस मोड़ के आने तक है। श्याम अचल ने सुनाया– श्ये रामनाम तो सभी मंत्रों का मूल है। अब राम पर विवाद तो करना फिजूल है। कलयुग में रामनाम है आधार मुक्ति का। जपने से नाश पाप का होता समूल है। नन्दिनी वर्मा ने सुनाया– श्हम सब मिल इस पावन क्षण में, नवप्रभात को नमन करें। अब गई निशा उठ जा प्यारे श्री ओम हरि का स्मरण करें। इला जायसवाल ने सुनाया– श्हमें एकता के डोर में बाँधती वह तो है हिन्दी। माँ की ममता सी हमें सींचती वह तो है हिन्दी। पूजा यादव ने पढ़ा– श्है देश बड़ा है व्यक्ति नहीं, है सबकी अभिव्यक्ति यही। हिन्दी का अविरल मान रहे, हिन्दी भाषा का ज्ञान रहे।

कार्यक्रम के आयोजक अनुज श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सर्वश्री जयकुमार, मोनिका, उमेश चन्द मालवीय, हर्ष सिंह राठौर, विमल कुमार, महफूज अली, प्रीति पांडेय, चाँदनी, शैलेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

पति–पत्नी में रिलेशन नहीं बने तो जूडिशियल सेपरेशन बरकरार: इलाहाबाद हाईकोर्ट ने तलाक के मामले में दिया फैसला, पत्नी की अपील खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा है कि हिंदू विवाह अधिनियम 1955 की धारा 10 के तहत यदि वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना या न्यायिक पृथक्करण (जूडिशियल सेपरेशन) के आदेश के बाद एक साल में पति–पत्नी के बीच कोई सहवास नहीं होता है, तो सेपरेशन के आदेश को बरकरार रखा जाएगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने यह आदेश जालौन उरई के मामले में दिया। जालौन की रहने वाली महिला की शादी 8 दिसंबर 2001 को हुई थी। पति ने आरोप लगाया कि पत्नी ने 2002 में उसे छोड़ दिया। चूंकि पत्नी ने दोनों पक्षों के बीच वैवाहिक संबंध को कंटीन्यू नहीं किया, इसलिए उसने अपने वैवाहिक अधिकारों की बहाली की मांग करते हुए कार्यवाही शुरू की। इसके एक साल बाद पति ने दावा किया कि दोनों पक्ष एक साथ नहीं रहते थे, जबकि पत्नी ने दावा किया कि दोनों साथ रहते थे।

रोटरी प्लैटिनम ने संयुक्तरूप से आयोजित की अंतर विद्यालय वाग्मिता प्रतियोगिता

प्रयागराज, । हिन्दी दिवस के अवसर पर रोटरी प्लैटिनम ने प्रयागराज मंडल के सभी रोटरी क्लबों के सहयोग से एक भव्य अंतर विद्यालय वाग्मिता प्रतियोगिता का आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में प्रयागराज के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 20 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रोटरी प्लैटिनम के अध्यक्ष रोटेरियन शशांक जैन ने बताया कि इस वर्ष हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में वाग्मिता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रयागराज मंडल के रोटरी मिडटाउन, रोटरी रॉयल्स, रोटरी एकेडेमिया, रोटरी ग्रैंड, रोटरी इलाहाबाद, रोटरी प्रयागराज संगम, रोटरी

नार्थ, एवं रोटरी साउथ क्लब के अध्यक्षों और सदस्यों की उपस्थिति विशेष रूप से सराहनीय रही। कार्यक्रम के समन्वयक एवं चार्टर अध्यक्ष रितेश सिंह ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में राजेन्द्र सिंह रज्जु भैया यूनिवर्सिटी के चीफ प्रॉक्टर एवं गांधी विचार एवं शांति विभाग के समन्वयक, डॉक्टर अविनाश कुमार श्रीवास्तव ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उनका स्वागत रोटरी अध्यक्ष ने अंगवस्त्र व मोमेंटो देकर किया। लिटरेसी चेयरमैन गौरव अग्रवाल ने बताया कि इस अवसर पर रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3120 के प्रयागराज रीजन के डीजीआरएच रोटेरियन पंकज जैन, असिस्टेंट गवर्नर रोटेरियन सौरभ पुरी, अमित त्रिपाठी, एवं जोनल सेक्रेटरी अनुरिता द्विवेदी का स्वागत भी अंगवस्त्र और मोमेंटो द्वारा किया गया। कार्यक्रम अध्यक्ष एवं बी बी एस ग्रुप ऑफ स्कूल्स के डायरेक्टर डॉक्टर ऋषि सहाय ने रोटरी क्लब के सभी अध्यक्षों रोटेरियन राधा सक्सेना, शर्मीली जैन, वैभव गोयल, मनदीप श्रीवास्तव, आफताब अहमद, अजय अग्रवाल, विजय अग्रवाल, कृष्ण मुरारी प्रजापति और शशांक जैन का स्वागत किया। रोटेरियन शशांक जैन ने इस कार्यक्रम को अब तक का सबसे सफल आयोजन बताया, जिसमें प्रयागराज मंडल के 9 रोटरी क्लबों ने संयुक्त रूप से हिस्सा लिया। इस आयोजन में कई गणमान्य रोटेरियन, स्कूली छात्र–छात्राएँ और अध्यापक उपस्थित रहे। सचिव सुमित अग्रवाल ने बताया कि वाग्मिता प्रतियोगिता में पूर्व मंडलाध्यक्ष रोटेरियन स्तुति अग्रवाल और डॉक्टर कृपा किंजलक ने निर्णायक की भूमिका निभाई और बच्चों के विचारों का आंकलन किया। निर्णायक मंडल का स्वागत भी अंगवस्त्र और मेमेंटो द्वारा किया गया। मीडिया प्रभारी मनीष गर्ग ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने बेहतरीन तैयारी और विचारशील भाषण प्रस्तुत किए, जिसने सभी को प्रभावित किया। प्रथम स्थान बी बी एस स्कूल, शिवकुटी की कक्षा 10 की छात्रा कुमारी अंकिता सरोज, द्वितीय स्थान बी बी एस इंटरनेशनल स्कूल, गोहरी की कक्षा 10 की छात्रा कुमारी श्रद्धा सिंह, और तृतीय स्थान सेंट पीटर्स एकेडमी, गोविंदपुर की कक्षा 10 की छात्रा कुमारी शांभवी मिश्रा ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को मेडल, बैग, घड़ी, प्रमाणपत्र आदि प्रदान किए गए, जबकि अन्य प्रतिभागियों को घड़ी और सांत्वना प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिता का सफल संचालन प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर रश्मि मिश्रा ने किया। अंत में रोटेरियन डॉक्टर ऋषि सहाय ने धन्यवाद ज्ञापन किया और इसे एक अविस्मरणीय कार्यक्रम बताया जिसमें प्रयागराज मंडल के कई प्रमुख रोटेरियन शामिल हुए।

निबंध प्रतियोगिता के साथ स्वच्छता पखवाड़े का हुआ समापन

स्वच्छता,शुद्ध तन–मन,पर्यावरण और स्वस्थ्य देश का आधार: मनीष

करछना। आज के बदलते परिवेश और आपाधापी के दौर में शुद्ध तन–मन और प्रदूषणमुक्त पर्यावरण के लिए स्वच्छता बहुत

जरूरी है। स्वच्छता,कई प्रकार के सामान्य रोगों से बचाव के साथ–साथ समाज और देश की सुख समृद्धि और स्वास्थ्य का आधार है। यह बातें रामपुर स्थित बृजमंगल सिंह इंटर कॉलेज में चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े के समापन पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के पूर्व प्रधानाचार्य मनीष तिवारी ने बच्चों के बीच कही। उन्होंने अच्छे स्वास्थ्य हेतु बच्चों से स्वयं और अपने आसपास के लोगों को भी स्वच्छता की प्रति सजग और जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान प्रवक्ता जगतपाल के संयोजन में स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारतश बिषयक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई।जिसमें विद्यालय के सीनियर वर्ग के दो दर्जन से अधिक छात्र और छात्राओं ने प्रतिभाग किया। रितु कुमारी को प्रथम अन्नू सिंह को द्वितीय और हर्ष प्रताप सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ जिन्हें प्रधानाचार्य द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।उधर पखवाड़े के अन्तर्गत सत्र में रोपे गए नये पौधों की सुरक्षा हेतु थाला निर्माण,विद्यालय परिसर में पहले से मौजूद बड़े पौधों की बेतरतीब और झाड़ी का शक्ल ले रही डालियों की छंटाई और छत,कमरों, बरामदों में सघन साफ–सफाई का कार्य किया गया। शिक्षकों ने भी प्रार्थना सभा स्थल पर बच्चों को साफ सफाई का महत्व बताते हुए स्वच्छता के प्रति संकल्प दिलाया।इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी और बच्चे मौजूद रहे।

भाद्रपद माह के दसलक्षण पर्व का सातवा दिन – उत्तम तप

इच्छा का निरोध करना तप है। समस्या को तपस्या बनाओ, जीवन का आनन्द आयेगा

प्रयागराज। श्री 1008 पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर बेनीगंज

में दसलक्षण महापर्व का सातवां दिन उत्तम तप बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक मनाया गया जिसमें लोगों ने तप के द्वारा आत्म शुद्धि का प्रण लिया अभिलाष जैन ने बताया की कर्मों का छय करने के लिए तप आवश्यक है तप का मतलब तपना और किसी भी चीज को शुद्ध करने के लिए तपना जरूरी होता है इस मौके पर नरेश जैन शेष जैन विकेश जैन महेश जैन अमित जैन आशीष जैन आदिश्वर जैन, अखिलेश चांद जैन उपस्थित रहे। श्री 1008 पार्शनाथ दिगंबर जैन मंदिर कर्नलगंज मे– सोम रेनू जैन ने पूजा के दौरान बताया– तप किये बिना संसार से छुटकारा नहीं होता है। चक्रवर्ती भी राज्य को छोड़कर तप धारण करके तीन लोक में वन्दन योग्य पूज्य हो जाते हैं। शांति धारा का सौभाग्य प्रमोद जैन, शाश्वत जैन को प्राप्त हुआ एवं मुदित जैन ने पूर्ण कराया। सामूहिक पूजा अखिल जैन, अखिल जैन, मोना जैन, दीपा जैन, नीलमा जैन, जैन अखिलेश चांद जैन, वृदमाला जैन, मंजू जैन आदि ने संपन्न कराई। यह जानकारी कमेटी के प्रचार मंत्री श्री अखिलेश चंद्र जैन द्वारा प्राप्त हुई।

हिंदी दिवस पर पंचलाइट कहानी का हुआ मंचन

प्रयागराज ससी.एम.पी. कालेज में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में पंचलाइट कहानी का विद्यार्थियों द्वारा मंचन किया गया।फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि गाँव में किस तरह से लोग जाति के आधार पर टोलियों में बंटे हुए हैं।किन्तु पंचलाइट कहानी एक साथ पूरे ग्रामीण परिदृश्य के साथ ही उनकी विचारधारा की भी अभिव्यक्ति करती है।उप प्राचार्य प्रो नीता सिन्हा ने अतिथियों का स्वागत किया, कहानी का मंचन हेतु निर्देशन डा पूजा गौड़ ने किया।अतिथियों के प्रति आभार प्रो दीनानाथ जी ने दिया।इस कार्यक्रम में मुख्य पात्रों को सम्मानित किया गया, जिसमें प्रो सरोज सिंह, प्रो आभा त्रिपाठी, डा रमाशंकर, प्रो. सत्यमवदा सिंह,डा गणेशन, डा प्रेमशंकर, डा भारती कोरी,डा प्रियंका गोंड, डा राजेन्द्र यादव, डा रंजीत सिंह डा रामानुज ,प्रो संगीता एवं तमाम विद्यार्थी उपस्थित रहें।

भयहरण नाथ धाम में प्रबन्ध समिति की बैठक 15 सितंबर को

प्रतापगढ। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरण नाथ धाम की प्रबन्ध संस्था की बैठक 15 सितंबर को होगी। बैठक में सावन मेला की समीक्षा व आगामी विकास योजना व कार्यक्रम पर चर्चा करके आवश्यक निर्णय होंगे। यह जानकारी देते हुए उपाध्यक्ष मीडिया पी बी सिंह ने बताया कि 15 सितंबर रविवार को दोपहर 12 बजे से आयोजित बैठक की अध्यक्षता अध्यक्ष आचार्य राज कुमार शुक्ल तथा संयोजन व संचालन महासचिव समाज शेखर करेंगे। बैठक मे संरक्षक गण व प्रबन्ध समिति तथा मंदिर व मेला उप समिति के सदस्य व पदाधिकारी गण प्रतिभाग करेंगे।

हिन्दी दिवस पर हिन्दी भाषा पर चर्चा-परिचर्चा

हिन्दी की बात हिन्दी में करिए

कानपुर। आज चौदह सितम्बर को हम सब हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं मंचों पर चर्चा परिचर्चा हो रही है कि कैसे हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप स्थापित किया जाए। हिन्दी भाषा के संवर्धन हेतु क्या नये आयाम खोजें जाएँ । हमारे देश का बुद्धिजीवी वर्ग इसी में लगा है। लेकिन दुर्भाग्यवश इस देश के विशेष रूप से हिन्दीभाषी राज्य ही हिन्दी बोलने में हीनता अनुभव करते हैं एक सामान्य नागरिक भी हर बात में दो चार शब्द आंग्ल भाषा के जोड़ देता है यह प्रवृत्ति आम हो गयी है। आज शहर समता विचार मंच के तत्वावधान में एक चर्चा परिचर्चा सभा का आयोजन किया गया जिसमें शहर तथा शहर के बाहर से आए हिन्दी भाषा के उन्नयन सशक्त प्रणेता जन सम्मिलित हुए। समस्त विद्वजनों ने हिन्दी भाषा के प्रयोग पर जोर दिया तथा इस बात पर बल दिया गया कि भाषा के संवर्धन का प्रारंभ घर से हो। प्रायः देखा गया है आजकल की नयी माँएं नवजात शिशु से आंग्ल भाषा में वार्ता करना पसंद करती हैं टूटे फूटे शब्दों में संतान को विद्यालय जाने से पहले ही भाषा ज्ञान करा देना चाहतीं शायद अपनी मातृभाषा के प्रति हीन भावना से से ग्रसित हैं। आंग्ल भाषा माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना आज के समय की आवश्यकता बन गयी है लेकिन उतना ही आवश्यक अपनी भाषा, अपनी संस्कृति तथा अपना इतिहास जानना है। हमारा पतन क्यों हुआ क्योंकि हमने अपनी जड़ों को भुला दिया। हिन्दी की दिशा तथा दशा पर गहन चर्चा हुई तथा बहुत सारी अच्छी बातें निकल कर सामने आयीं। अभी भी देर नहीं हुई है मात्र आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की। आज हिन्दी दिवस पर शपथ ग्रहण करके सबने संकल्प लिया कि हम सब हिन्दी में बात करेंगे और अन्य लोगों को भी प्रेरित करेंगे। आज के कार्यक्रम में डॉ सुषमा त्रिपाठी, श्रद्धा श्रीवास्तव, योगिता सिंह श्हंसाश, सुषमा सिंह श्उर्मीश , सुनीता गुप्ता, शिप्रा सिंह की उपस्थिति रही।कार्यक्रम की अध्यक्षता सीमा वर्णिका ने की।

हिन्दी आज विश्व की प्रथम भाषा बनने की ओर अग्रसर : भगवान उपाध्याय'

देहरादून। हिन्दी दिवस के अवसर पर दि ग्राम टुडे प्रकाशन समूह का आनलाइन कार्यक्रम समूह अध्यक्ष अनिल पांडेय की अध्यक्षता ,समूह संपादक शिवेश्वर दत्त पाण्डेय के मुख्य आतिथ्य और सुभाष पांडेय के सफल संचालन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए प्रयागराज के वरिष्ठ साहित्यकार संपादक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि हिन्दी आज विश्व की प्रथम भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हम सबको इसका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। ओपन डोर के संपादक अमन कुमार त्यागी ने कहा कि आज हिन्दी कंप्यूटर और डिजिटल जगत में भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। अखिल विश्व में हिंदी की पताका फहरा रही है। प्रेरणा पत्रिका के संपादक विजय तन्हा ने कहा कि हिन्दी का संबध रोजगार से जुड़ने पर इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। अनिल अभिव्यक्ति के संपादक डॉ.अनिल शर्मा अनिल ने कहा कि हिन्दी व्यवहार के साथ साथ व्यापार की व्यवसाय की भाषा बन गयी है। इसके बढ़ते चरण प्रथम पायदान की ओर अग्रसर है। मुख्य अतिथि डॉ.शिवेश्वर दत्त पाण्डेय ने हिन्दी के विकास की संभावनाएं और वर्तमान स्थिति पर विस्तृत चर्चा की। अध्यक्ष अनिल पांडेय ने कहा कि हिन्दी अब विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। संचालन कर रहे सुबाश पांडेय ने कहा कि दि ग्राम टुडे हिन्दी लेखकों को प्रमुखता से प्रकाशित करता है। आयोजन में सतेन्द्र शर्मा तरंग,अनुपम मिश्र,देवनाथ तिवारी, तेजेन्द्र प्रताप सिंह,सुदर्शन सिंह,बृज बिहारीलाल चौरसिया, रिकी सिंह, रीता नौटियाल, सुचित्रा भट्ट, अनीता नेगी,सोमेश्वर रौतेला,नाथमणि विष्ट आदि ने समसामयिक विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर दि ग्राम टुडे के विभिन्न संस्करणों में हिन्दी दिवस पर रचनात्मक सहयोग देने वाले साहित्यकारों को टीजीटी साहित्य सेवी सम्मान 2024 से अलंकृत किया गया।

'इंडोनेशिया में चल रही प्रदर्शनी में प्रयागराज से डॉ. जाहेदा खानाम की पेंटिंग काबा की शक्ति की हो रही सराहना'

खानम आर्ट गैलरी की आठवीं राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी फ्लोरा एंड फौना 20 सितंबर से शुरू'

प्रयागराज । इंडोनेशिया के समृद्ध पूर्वी कलिमंतान स्थित इस्लामी सांस्कृतिक केंद्र में 8 से 15 सितंबर तक जश्न–ए–मिलादुन्नबी और अंतर्राष्ट्रीय कैलीग्राफी प्रदर्शनी में प्रयागराज की कलाकार, खानम आर्ट गैलरी की निदेशक डॉ. जाहेदा खानम की पेंटिंग ष्पावर ऑफ काबाष दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई । प्रदर्शनी के क्यूरेटर गौरी युसुफ हुसैन हैं। अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का नाम पावर ऑफ काबाष है,

जो इस्लाम के सबसे पवित्र स्थल का प्रतीक है। प्रदर्शनी में विभिन्न कैलीग्राफी प्रदर्शित हैं, जिसके माध्यम से इस्लामी कला और संस्कृति को प्रदर्शित किया गया है। जिसका उद्देश्य कला के माध्यम से सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना भी है। छात्रों में कैलीग्राफी के प्रति जागरूकता और रुचि को पैदा करना है। खानम आर्ट गैलरी के मीडिया प्रभारी कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा एवं तलत महमूद ने बताया कि प्रयागराज में खानम आर्ट गैलरी में 20 सितंबर 2024 को आठवीं फ्लोरा एंड फौना राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन निःशुल्क रखा गया है जिसमें पूरे भारत के आर्टिस्ट 18 सितंबर 2024 तक अपनी एक पेंटिंग जमा कर सकते हैं।

जिला एवं विश्वविद्यालय इकाई के पदाधिकारियों ने पुष्पगुच्छ–पुष्पहार से स्वागत–अभिनन्दन किया।

प्रयागराज।संगीत नाटक अकादमी उत्तर प्रदेश के नवनियुक्त अध्यक्ष प्रो0 (डॉ0) जन्तर खोत के प्रयागराज दौरे पर अकादमी की नवनियुक्त सदस्य,संस्कार भारती प्रयागराज महानगर की उपाध्यक्ष एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 ज्योति मिश्र के बैंक रोड स्थित आवास पर संस्कार भारती प्रयागराज महानगर,जिला एवं विश्वविद्यालय इकाई के पदाधिकारियों ने पुष्पगुच्छ–पुष्पहार से स्वागत–अभिनन्दन किया।स्वागत करने वालों में महानगर अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार मिश्र,उपाध्यक्ष प्रेमलता मिश्र,महामंत्री विभव शंकर मिश्र,कोषाध्यक्ष शम्भूनाथ श्रीवास्तव,चित्रकला संयोजक रवीन्द्र कुशवाहा,जिला इकाई अध्यक्ष गिरिजाशंकर मिश्र श्राजनजीश,विश्वविद्यालय इकाई अध्यक्ष डॉ0 इन्दु शर्मा,विश्वविद्यालय में संगीत प्रोफेसर पं0 प्रेम कुमार मलिक,ग्वालियर संगीत विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संगीत विभाग की अध्यक्ष रहीं डॉ0 स्वतंत्र बाला शर्मा एवं संस्कार भारती काशी–प्रांत के प्रयागराज विभाग संयोजक सुशील कुमार राय आदि प्रमुख रूप से रहे।इस अवसर आलोक मिश्र,अलका सिंह,स्वर्णिमा मिश्रा,डॉ0 आकांक्षा पालआदि अनेक संगीत के अध्यापिकाछात्र भी उपस्थित रहे।

एन यू जे प्रयागराज इकाई की मासिक बैठक संपन्न

लिए गए कई अहम निर्णय

एन यू जे प्रयागराज की मासिक बैठक शनिवार को संगठन के संरक्षक परवेज आलम की देखरेख में कर्नलगंज स्थित शहर समता हिंदी दैनिक के संपादक वा संगठन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष उमेश श्रीवास्तव के निवास पर संपन्न हुई । ।जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार कुंदन श्रीवास्तव ने की।बैठक में28 सितंबर को अमर शहीद भगत सिंह की जयंती पर सुलेम सराय स्थित नेहरू पार्क में संगठन के बैनर तले सभी पदाधिकारियों और सदस्यों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के उद्देश्य से एक एक पौधा रोपे जाने पर सहमति व्यक्त की।इसके साथ ही वरिष्ठ पत्रकार मोहम्मद जिया सिद्दीकी पर गुंडों द्वारा जान से मरने और लगातार उनको प्रताड़ित किए जाने पर शिकायत के बावजूद कोई भी कार्यवाही नहीं किए जाने पर पुलिस की कार्य शैली पर चिंता व्यक्त करते हुवे पर एक प्रतिनिधि मंडल ने अति शीघ्र ही पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से मिलकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपने की बात कहीं।इसके साथ ही कई अहम मुद्दों पर कलमकारों ने जमकर चर्चा करते हुवे नए कलमकारों को संस्था की सदस्यता दिलाए जाने की बात करी।बैठक में संरक्षक परवेज आलम के साथ ही उपाध्यक्ष डॉक्टर सुधाकर पांडेय,धर्मेंद्र कुमार श्रीवास्तव,अभय शंकर पांडेय,मोजिया सिद्दीकी। महामंत्री राजीव कुमार सिंह,मधुर दरबारी,रंजीत निषाद,सौरभ कुमार आदर्श,इरफान खान के साथ ही सदस्य राजीव, नीरज लोडिया,शिव पांडेय,रूपेश कुमार श्रीवास्तव सहित अन्य लोग शामिल रहे।

डॉक्टर जी एस तोमर की पुस्तक का हुआ लोकार्पण

प्रयागराज सडॉ शान्ति चौधरी ने कहा कि अध्यात्म हमारे स्वस्थ एवं नीरोग जीवन का आधार हैस इस अवसर पर डॉ जी यस तोमर की पुस्तक भेषज्यम का लोकार्पण किया गया ।

हिन्दी पर गीत

हर भाषा– भाषी को सबसे पहले यह भाती है हिन्दी,
हर भूले को लगता जैसे रस्ता दिखलाती है हिन्दी ।

पाट रही नित अवरोधों को क्षण– क्षण मान बढ़ाती है ,
देश– देश के प्रांत –प्रांत में रचती बसती इठलाती है,
भावों को अपने शब्दों में कहना सिखलाती है हिन्दी,
हर भूले को लगता जैसे रस्ता दिखलाती है हिन्दी .....।

लिखना– पढ़ना, सुनना– गढ़ना ,इसमें ही सबसे अच्छा है ,
सरल सुबोध सहज हिन्दी का रूप सभी से भी अच्छा है,
पूरब–पश्चिम, उत्तर –दक्षिण ,सबसे मिलवाती है हिन्दी,
हर भूले को लगता जैसे, रस्ता दिखलाती है हिन्दी .....।

मन का कलुष मिटाती हिन्दी गंगा की पावन धारा,
सर्वशास्त्र की भाषा है यह इसको शत–शत नमन हमारा,
मात– पिता के प्रेम सरीखी , हमको थपकाती है हिन्दी ,
हर भूले को लगता जैसे, रस्ता दिखलाती है हिन्दी .....

माटी की सोंधी खुशबू सी महिमा माटी की बतलाए,
तुलसी, मीरा द्वारा पोषित वेदों की गाथा भी गाए,
हर प्रांगण में पुष्पित सुंदर रचना कहलाती है हिन्दी,
हर भूले को लगता जैसे, रस्ता दिखलाती है हिन्दी .....।
रूप– रंग मनभाव है यह सबका ही मन पढ़ती हिन्दी ,
प्रेम एकता के पृष्ठों पर नित नूतन पद गढ़ती हिन्दी ।
सखी– सहेली, मीत बनाकर चलना सिखलाती है हिन्दी ।
हर भूले को लगता जैसे रस्ता दिखलाती है हिंदी.....।।

संगीता श्रीवास्तव श्सुमनश
महेंद्र नगर ट्रांसपोर्ट नगर
संपर्क –9575065333

सम्पादकीय.....

बुढ़ापे का सुरक्षा कवच

ऐसे वक्त में जब भारतीय परिवारों के स्वरूप में बदलाव के बाद करोड़ों बुजुर्ग एकाकी जीवन बिता रहे हैं और उनके पास महंगे इलाज के लिये पर्याप्त जमा पूंजी नहीं है, वे अब भविष्य की चिंताओं से कुछ मुक्त हो सकते हैं। निस्संदेह, बुढ़ापा भी अपने आप में एक रोग है। जब आय के स्रोत सिमट जाते हैं और बच्चों से पर्याप्त मदद नहीं मिलती तो शरीर में रोग दस्तक देने लगते हैं, फिर महंगे इलाज की चिंता और बढ़ जाती है। अकसर भारत में कर्मचारी व आम लोग कहते हैं कि वे जीवन भर आयकर चुकाते हैं, लेकिन बुढ़ापे में सरकार की ओर से सामाजिक सुरक्षा ना के बराबर होती है। लेकिन अब मोदी सरकार ने लोकतंत्र के सामाजिक कल्याणकारी स्वरूप को तरजीह दी है। केंद्र सरकार ने अब सत्तर साल से ऊपर के सभी वरिष्ठ नागरिकों को 'आयुष्मान भारत' योजना में शामिल करने का निर्णय लिया है। कहा जा रहा है कि करीब साढ़े चार करोड़ परिवार इस योजना में शामिल होंगे। इन परिवारों के छह करोड़ वरिष्ठ नागरिक इस योजना के अंतर्गत मुफ्त इलाज करा सकेंगे। दरअसल वर्ष 2018 में शुरू हुई आयुष्मान भारत योजना में अब तक केवल गरीब परिवार ही शामिल हो सकते थे, जिन्हें पांच लाख का कैशलेस कवर दिया जाता था। अब इस योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को दिया जाएगा। बहुत संभव है कि इस समय जब कुछ राज्यों में चुनाव की प्रक्रिया चल रही है तो इस घोषणा के राजनीतिक निहितार्थों पर चर्चा हो सकती है। लेकिन भाजपा ने 2024 में लोकसभा चुनाव के लिये जारी घोषणापत्र में वायदा किया था कि सरकार बनने के बाद आयुष्मान भारत योजना के दायरे को बढ़ाकर इसमें सभी वरिष्ठ नागरिकों को शामिल किया जाएगा। अब चाहे उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। अब इस योजना के तहत उन्हें अलग से कार्ड जारी किए जाएंगे। निश्चित रूप से देश में सामाजिक रूप से तेजी से बदलाव आ रहा है। संयुक्त परिवारों की जगह अब एकल परिवार ले रहे हैं। बच्चे सीमित संसाधनों व अन्य कारणों से अपने बुजुर्ग माता–पिता का पूरी तरह ख्याल रखने में सक्षम नहीं दिखते। ऐसे में वृद्धों के लिये यह कदम सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि जो कमजोर वर्ग के वरिष्ठ नागरिक आयुष्मान भारत योजना का लाभ ले रहे थे, उन्हें पांच लाख रुपये टॉप–अप कवर मिल सकेगा। वहीं योजना के विस्तार में प्रावधान है कि यदि परिवार में 70 साल के दो बुजुर्ग हैं तो इस योजना का लाभ उन्हें साझा रूप में मिलेगा। वहीं दूसरी ओर सत्तर साल से अधिक उम्र के वे वरिष्ठ नागरिक जो पहले ही केंद्र सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं तथा दूसरी सार्वजनिक स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ उठा रहे हैं, वे अपनी पुरानी योजना या नई योजना का विकल्प चुन सकते हैं। उल्लेखनीय है कि इस योजना का व्यय केंद्र व राज्य सरकारें मिल कर उठाती हैं। वरिष्ठ नागरिक इस योजना का लाभ निजी व राजकीय अस्पतालों में ले सकते हैं। वहीं सरकार की ओर से बताया गया है कि जो सत्तर साल से अधिक के नागरिक प्राइवेट बीमा योजना या फिर राज्य कर्मचारी बीमा योजना का लाभ ले रहे हैं, वे भी नई योजना का लाभ लेने के अधिकारी होंगे। लेकिन उन्हें इस योजना के लिये आवेदन करना होगा। सरकार ने फिलहाल इस योजना के लिये करीब साढ़े तीन हजार करोड़ का बजट रखा है और आवश्यकता पड़ने पर बजट बढ़ाने की बात कही है। बहरहाल, इस योजना से जहां एक ओर वारिष्ठ नागरिकों को राहत मिलेगी, वहीं सरकारी अस्पतालों पर भी दबाव कम होगा, क्योंकि लाभार्थी निजी अस्पतालों में भी योजना का लाभ उठा सकते हैं। लेकिन जरूरी है कि मरीजों को किसी परेशानी से बचाने के लिये सरकार क्लेम सेटलमेंट के लिये पारदर्शी व्यवस्था लागू करे। बेहतर होगा कि सरकार इस योजना की विसंगतियों व जमीनी हकीकत का आकलन कर इस योजना को प्रभावी बनाने का प्रयास करेगी। विगत में निजी अस्पतालों में बिलों की विसंगतियों को लेकर खबरें सामने आती रही हैं।

सीताराम येचुरीः एक महत्वपूर्ण आवाज खामोश हो गई

मोहम्मद रिफाकत

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव सीताराम येचुरी नहीं रहे। 72 बरस की आयु में उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली और इस तरह देश में लोकतंत्र और संविधान की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहने वाली एक बुलंद आवाज शांत हो गई। हालांकि पचास बरसों से सुदीर्घ राजनैतिक जीवन में सीताराम येचुरी जिन मूल्यों के साथ काम करते रहे, उनकी गूंज बरसों–बरस बनी रहेगी, ऐसी उम्मीद है। सीताराम येचुरी भारतीय राजनीति के उन चंद महत्वपूर्ण नामों में से एक थे, जिन्होंने संसद से सड़क तक जनता के हितों की रक्षा और संवैधानिक मूल्यों के लिए राजनीति की। श्री येचुरी के लिए राजनीति दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने का जरिया थी। सीताराम येचुरी एक बेहतरीन वक्ता थे और लगभग सभी दलों के साथ, वैचारिक मतभेदों के बावजूद उनके सौहाद्रपूर्ण संबंध थे। संसद में उनके भाषणों को गौर से सुना जाता था। 1974 में स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया यानी एसएफआई से उनके राजनैतिक जीवन की शुरुआत हुई, 1975 में वे सीपीएम के सदस्य बन गए। दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक करने के बाद वे आगे की पढ़ाई के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में दाखिल हुए और यहां प्रकाश करात के साथ मिलकर वामपंथ का मजबूत गढ़ बनाने का काम उन्होंने किया। 1978 में श्री येचुरी एसएफआई के संयुक्त सचिव बने और 1979 में एसएफआई के अध्यक्ष बने। वे पहले अध्यक्ष थे, जो केरल या बंगाल के बाहर से थे। सीताराम येचुरी जब जेएनयू से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहे थे, तभी इंदिरा गांधी सरकार ने 1975 में आपातकाल लगाया और उन्हें कई अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार कर लिया गया था। इस वजह से उनकी पीएचडी अधूरी रह गई। जेल से बाहर आने के बाद सीताराम येचुरी जेएनयू छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। 1992 में उन्हें पोलित ब्यूरो का सदस्य चुना गया। श्री येचुरी 32 वर्षों तक सीपीएम के पोलित ब्यूरो के सदस्य रहे। 2015 में वे पार्टी के महासचिव बने और इसके बाद 2018 फिर 2022 में इसी पद के लिए फिर से चुने गए। सीताराम येचुरी 2005 से 2017 तक राज्यसभा सांसद भी रहे। अपने सुदीर्घ राजनैतिक जीवन में सीताराम येचुरी ने आपातकाल से लेकर गठबंधन सरकारों के दौर देखे। 1996 में जब संयुक्त मोर्चा सरकार बनी, तब वे उन नेताओं में शामिल थे, जिन्होंने साझा न्यूनतम कार्यक्रम का मसौदा तैयार करने में अहम भूमिका निभाई थी। दरअसल श्री येचुरी ने पार्टी के दिवंगत नेता हरकिशन सिंह सुरजीत के मार्गदर्शन में काम सीखा था, जिन्होंने गठबंधन युग की सरकार में प्रमुख भूमिका निभाई थी। उनके निर्देशन में सबसे पहले वी पी सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और 1996–97 की संयुक्त मोर्चा सरकार बनी, दोनों ही सरकारों को माकपा ने बाहर से समर्थन दिया था। सीताराम येचुरी ने अपने कौशल को तब और निखारा जब वामपंथी दलों ने 2004 में पहली यूपीए सरकार का समर्थन किया और अक्सर नीति–निर्माण में कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार पर दबाव डाला। आपातकाल में जेल जाने से लेकर कांग्रेस को सरकार बनाने तक सभी तरह के राजनैतिक उतार–चढ़ाव के साक्षी सीताराम येचुरी रहे हैं। इस देश के लोगों को वह तस्वीर याद है, जब जेएनयू की चांसलर पद से इंदिरा गांधी के हटने की मांग लेकर जेएनयू के छात्र उन्हीं के आवास के बाहर पहुंचे थे। तब इंदिरा गांधी के सामने ही उनके इस्तीफे की मांग और विरोध का ज्ञापन सीताराम येचुरी ने पढ़ा था। तब इंदिरा गांधी को तानाशाह बताया जा रहा था कि लेकिन असल में वहां भारतीय लोकतंत्र की मजबूती प्रदर्शित हो रही थी। अब ऐसी तस्वीर की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सीताराम येचुरी ने घोषित आपातकाल और अघोषित आपातकाल के फर्क को करीब से महसूस किया है। जब देश में 2014 के बाद भाजपा के बहुमत वाली सरकार के दौरान एक नये तरह की राजनीति शुरु हुई, जिसमें जनता की आवाज के लिए कोई जगह दिखाई नहीं देती है, उस पीड़ा को सीताराम येचुरी ने संसद के अपने भाषणों में व्यक्त किया। जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म करने का फैसला हो, या नोटबंदी का आकस्मिक ऐलान हो या राम मंदिर के उद्घाटन में धर्मनिरपेक्षता की राह पर डटे रहने की प्रतिबद्धता हो, सीताराम येचुरी ने बिना किसी लाग–लपेट के भाजपा सरकार को आईना दिखाने का काम किया। राजनीति के इस मौजूदा दौर में जब मूल्यपरक राजनीति की जरूरत पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है, जब अधिनायकवाद के खतरे बढ़ रहे हैं।

और देश की एकता और अखंडता के नाम पर नए तरह के विचार थोपे जा रहे हैं, तब सीताराम येचुरी जैसे नेताओं की कमी बेहद खलेगी। क्योंकि सुलझे हुए, मुद्दों की जानकारी रखने वाले, संवेदनशील और बौद्धिक नेता अब गिने–चुने ही रह गए हैं। देश में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने सीताराम येचुरी के निधन पर अफसोस जाहिर करते हुए बिल्कुल ठीक लिखा है कि वे आइडिया ऑफ इंडिया के संरक्षणकर्ता थे, जिन्हें देश की गहरी समझ थी। भारत के विचार, उसकी पहचान को समझने वाले सीताराम येचुरी के निधन से भारतीय राजनीति में एक ऐसी रिक्तता आ गई है, जिसे भरा जाना आसान नहीं होगा। वामपंथ के लिए भी सीताराम येचुरी का जाना अपूरणीय क्षति है, क्योंकि वैचारिक संपन्नता के साथ जनता से जुड़ी राजनीति करने का उनका कौशल अनूठा था। सीताराम येचुरी की जनहितकारी प्रतिबद्धता राजनीति में जीवित रहे, यही उन्हें सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा और मनुस्मृति के मूल्य

राम पुनियानी

पिछले आम चुनाव (अप्रैल–मई 2024) में जाति जनगणना एक महत्वपूर्ण मुद्दा थी। इंडिया गठबंधन ने जाति जनगणना की आवश्यकता पर जोर दिया जबकि भाजपा ने इसकी खिलाफत की। जाति जनगणना के संबंध में विपक्षी पार्टियों की सोच एकदम साफ और स्पष्ट है। जाति के मुद्दे ने हिन्दू दक्षिणपंथी राजनीति को मजबूती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उच्च जातियां, निम्न जातियों का शोषण करती आईं हैं यह अहसास जोतीराव फुले और भीमराव आंबेडकर जैसे लोगों को था। इस मुद्दे से जनता का ध्यान हटाने के लिए उच्च जातियों के संगठनों ने भारत के अतीत का महिमामंडन करना शुरू कर दिया। हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा और मनुस्मृति के मूल्य इन ताकतों के एजेंडा के मूल में थे। पिछले कुछ दशकों से आरएसएस ने इस नैरेटिव को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है कि सभी जातियां बराबर हैं। संघ से जुड़े लेखकों ने विभिन्न जातियों पर कई किताबें लिखीं जिनमें यह कहा गया कि अतीत में सभी जातियों का दर्जा बराबर था। आरएसएस नेताओं का यह दावा है कि अछूत जातियां विदेशी आक्रान्ताओं के अत्याचारों के कारण अस्तित्व में आईं और उसके पहले तक हिन्दू धर्म में उनका कोई स्थान नहीं था। संघ के कम से कम तीन नेताओं ने दलित, आदिवासी और कई अन्य समूहों के जन्म के लिए मध्यकाल में श्मुस्लिम आक्रमणश को जिम्मेदार बताया है. संघ के एक शीर्ष नेता भैयाजी जोशी के अनुसार, हिन्दू धर्मग्रंथों में कहीं भी शूद्रों को अछूत नहीं बताया गया है। मध्यकाल में श्इस्लामिक अत्याचारोंश के कारण अछूत दलितों की एक नयी श्रेणी उभरी। जोशी के लिखा हैरू श्हिन्दुओं के स्वाभिमान को तोड़ने के लिए अरबी विदेशी हमलावरों, मुस्लिम राजाओं और गौमांस भक्षण करने वालों ने चंद्रवंशी क्षत्रियों को गायों को काटने, उनकी खाल उतारने और उनके कंकाल को किसी सूनी जगह फेंकने जैसे घिनौने काम करने पर मजबूर किया। इस तरह विदेशी हमलावरों ने श्चर्म–कर्मश करने के लिए एक नयी जाति बनाई और यह काम स्वाभिमानी हिन्दू कैदियों को सजा के स्वरुप दिया जाता था। इस सारे दुष्प्रचार का उद्देश्य है जाति को ऐसी सकारात्मक संस्था बताना, जो हिन्दू राष्ट्र की रक्षा करती आई है। जाति जनगणना की मांग के जोर पकड़ने की पृष्ठभूमि में आरएसएस के मुखपत्र पाञ्चजन्य ने 5 अगस्त (2024) के अपने अंक में हितेश सरकार का एक लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक है– श्ऐ नेताजीरू कौन जात होश। लेख में यह दावा किया गया है कि विदेशी आक्रान्ता जाति की दीवारों को तोड़ नहीं सके और इसी कारण वे हिन्दुओं का धर्मपरिवर्तन नहीं करवा सके। जाति, हिन्दू समाज का एक मुख्य आधार है और उसी के कारण विदेशी हमलों के बाद भी देश सुरक्षित और मजबूत बना रहा। इस लेख में बम्बई के पूर्व बिशप लुई जॉर्ज मिल्ने की पुस्तक श्मिशन टू हिन्दूसरू ए कॉन्ट्रिब्यूशन टू द स्टडी ऑफ मिशनरी मेथडसश से एक उद्धरण दिया गया है। उद्धरण यह हैरू श...तो फिर वह (जाति), सामाजिक ढांचे का आवश्यक हिस्सा है। मगर फिर भी, व्यावहारिक दृष्टिकोण से वह लाखों लोगों के लिए धर्म है...वह किसी व्यक्ति की प्रकृति और धर्म के बीच कड़ी का काम करती है। लेखक के अनुसार, मिशनरीज को जो चीज उस समय खल रही थी वही आज भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को खल रही है क्योंकि कांग्रेस, ईस्ट इंडिया कंपनी और लार्ड ए.ओ. ह्यूम की उत्तराधिकारी है। इसमें यह भी कहा गया है कि चूँकि आक्रान्ता, जाति के किले को नहीं तोड़ सके इसलिए उन्होंने (मुसलमानों) ने इज्जतदार जातियों को हाथ से मैला साफ करने के काम में लगाया और यह भी कि उस काल से पहले हाथ से मैला साफ करने की प्रथा का कहीं वर्णन नहीं मिलता। लेख में कहा गया है कि मिशनरी समाज के पिछड़ेपन के लिए जाति प्रथा को दोषी मानती हैं और कांग्रेस को भी जाति एक काँटा नजर आती है। यह लेख झूठ का पुलिंदा है। पहली बात तो यह कि दूसरी शताब्दी ईस्वी में लिखी गयी श्मनुस्मृतिश में जाति प्रथा की व्याख्या और उसकी जबरदस्त वकालत की गयी है। यह पुस्तक देश में विदेशी आक्रांताओं के आने के सैकड़ों साल पहले लिखी गयी थी। कई अन्य पवित्र हिन्दू ग्रंथों में भी कहा गया है कि निम्न जातियों के लोगों को उच्च जातियों से दूर रहना चाहिए। यही सोच अछूत प्रथा और हाथ से मैला साफ करने की प्रथा– दोनों की जननी है। पवित्रता और प्रदूषण से सम्बंधित सारे नियम और आचरण ओर पुनर्जन्म का सिद्धांत भी इसी सोच पर आधारित है। नारद संहिता और वाजसनेयी संहिता भी यही कहती हैं। नारद संहिता में अछूतों के लिए जो कर्तव्य निर्धारित किये गए हैं। मानव मल साफ करना उनमें से एक है। वाजसनेयी संहिता कहती है कि चांडाल गुलाम हैं जो मनुष्यों का मैला साफ करते हैं। डॉ आंबेडकर का मानना था कि जाति प्रथा को ब्राह्मणवाद ने समाज पर लादा है। आरएसएस के मुखपत्र में प्रकाशित लेख जहाँ जाति प्रथा की तारीफों के पुल बांधता है वहीं क्रान्तिकारी दलित चिन्तक और कार्यकर्ता उसे हिन्दू समाज की सबसे बड़ी बुराईयों में से एक मानते हैं। इसी कारण डॉ आंबेडकर ने जाति के विनाश की बात कही थी। हिन्दू राष्ट्रवादी, आनुपातिक प्रतिनिधित्व और जाति जनगणना के पूरी तरह खिलाफ हैं। आनुपातिक प्रतिनिधित्व की शुरुआत गांधीजी और डॉ आंबेडकर के बीच हस्ताक्षरित पूना पैक्ट से हुई थी और बाद में इसे संविधान का हिस्सा बनाया गया। इसके विरोध में अहमदाबाद में 1980 और फिर 1985 में दंगे हुए। सन् 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के बाद, राममंदिर आन्दोलन अचानक अत्यंत आक्रामक हो गया। जहां तक कांग्रेस के ईस्ट इंडिया कंपनी और ह्यूम की विरासत की उत्तराधिकारी होने के आरोप का सवाल है। यह सफेद झूठ है। इस तरह के झूठ केवल वे ही लोग फैला सकते हैं जो स्वाधीनता आन्दोलन से दूर रहे और आज भी भारत को एक बहुवादी और विविधताओं का सम्मान करने वाले देश के रूप में नहीं देखता चाहते।

तिलक से लेकर गांधी तक के नेतृत्व में कांग्रेस ब्रिटिश शासन के खिलाफ थी। ह्यूम इसी कांग्रेस का हिस्सा थे। ऐसा आरोप लगाया जाता है कि ह्यूम ने कांग्रेस की परिकल्पना एक सेफ्टी वाल्व के रूप में की थी। मगर गहराई से अध्ययन करने पर कांग्रेस के गठन की प्रक्रिया और उद्देश्य साफ हो जाते हैं। देश में उभरते हुए राष्ट्रवादी संगठनों जैसे मद्रास महाजन सभा (संस्थापक पनापक्कम आनंदचेरलू), बॉम्बे एसोसिएशन (संस्थापक जगन्नाथ शंकर शेठ) और पूना सार्वजनिक सभा (संस्थापक एम. जी. रानाडे) को स्वतंत्रता की अपनी मांग को उठाने के लिए एक राजनैतिक मंच की जरूरत थी। उन्होंने कांग्रेस के आव्हान को स्वीकार किया और उसे एक ऐसा राष्ट्रीय मंच बनाया जो नए उभरते भारत की आकांक्षाओं को उठा सके। इसकी शुरूआती मांगो में शामिल था आईसीएस की परीक्षा के लिए भारत में केंद्र बनाना। कांग्रेस ने जमींदारों पर नियंत्रण लगाने की मांग भी उठाई ताकि उनकी अधीनता में काम कर रहे श्रमिक आजाद हो सकें और यह भी कहा कि देश के औद्योगीकरण के लिए अधिक सुविधाएं मुहैय्या करवाई जानी चाहिए। आगे चलकर इसी कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य और अंग्रेजों भारत छोड़ो के नारे भी बुलंद किये। जिस कांग्रेस पर पाञ्चजन्य निशाना साध रहा है, उसी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया और साथ ही सामाजिक न्याय, जिसके आंबेडकर पुरजोर समर्थक थे, के मुद्दे को भी उठाया। आंबेडकर, जो भारतीय संविधान के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते थे और आरएसएस, जो हिन्दू राष्ट्रवाद की वकालत करती थी, के बीच के अंतर को भुलाया नहीं जा सकता। आंबेडकर ने मनुस्मृति का दहन किया था जबकि आरएसएस इस पवित्र पुस्तक में प्रतिपादित जातिगत असमानता के मूल्यों का समर्थक है। आंबेडकर ने भारत के संविधान का मसविदा तैयार किया था और आरएसएस ने इसी संविधान का खुलकर विरोध किया था। और आज भी परोक्ष रूप से कर रहा है।

भारत में खनिज तेल की खुदरा कीमतों पर नियंत्रण हटाना एक बड़ा छलावा

भारत में खनिज तेल की खुदरा कीमतों पर से नियंत्रण हटाना स्थानीय खुदरा बाजार की कीमतों को वैश्विक मूल्य प्रवृत्तियों से जोड़ने के किसी ईमानदार उद्देश्य से ज़्यादा आम जनता और सीधे–साधे उपभोक्ताओं को धोखा देना है। पिछले कुछ वर्षों में यह देखा गया है कि जब भी वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो खुदरा तेल की कीमतें अक्सर तेजी से बढ़ जाती हैं, परन्तु जब वैश्विक बाजार में कीमतें घटती हैं तब भारत में खनिज तेल की खुदरा कीमतें तेजी से नहीं घटतीं। सबसे पहले 2010 में मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा पेट्रोल की खुदरा कीमतों पर और उसके बाद 2015 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा डीजल की कीमतों पर से नियंत्रण हटाया गया। देश लगभग 87 प्रतिशत आयातित खनिज तेल पर निर्भर है। आयात की कीमतों में गिरावट आने पर भी खुदरा तेल की कीमतें शायद ही कभी कम होती हैं, यहां तक कि काफी लंबे समय तक भी नहीं। पेट्रोल और डीजल की कीमतें केंद्र और राज्य सरकारों के कर राजस्व और शुल्क का सबसे बड़ा स्रोत हैं। यहीं पर समस्या है। बहुत ही सावधानी से पेट्रोलियम को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के दायरे से बाहर रखा गया है। जून 2022 के मध्य से, वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की मासिक औसत कीमत में काफी गिरावट आई है – अपने चरम पर 116 डॉलर प्रति बैरल से अब 76.8 डॉलर प्रति बैरल तक। वास्तव में, अंतरराष्ट्रीय तेल की कीमतें चालू वर्ष के दौरान अपने सबसे निचले स्तर पर आ गई हैं। दुर्भाग्य से, सरकार की तथाकथित खुदरा मूल्य नियंत्रण नीति बाजार की वास्तविकता से पूरी तरह से अलग है। न तो सरकार और न ही तेल कंपनियों ने कच्चे तेल की गिरती आयात लागत को ध्यान में रखते हुए खुदरा तेल की कीमतों को नीचे समायोजित करने का कोई प्रयास किया है। इसके बजाय, तेल कंपनियां उच्च लाभ कमा रही हैं। सरकार का कर राजस्व भी अप्रभावित रहा है। व्यवहार में, बहुप्रचारित तेल मूल्य नियंत्रण एक बड़ा दिखावा प्रतीत होता है। अक्सर तेल और रसोई गैस की खुदरा कीमतें वैश्विक कीमतों या कच्चे तेल की आयात लागत के साथ उनके अपेक्षित प्राकृतिक जुड़ाव की तुलना में केंद्र और राज्यों में चुनावों से अधिक जुड़ी होती हैं। आधिकारिक तौर पर, सरकार द्वारा नियंत्रित सार्वजनिक क्षेत्र के तेल विपणन संगठन पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतों को निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार हैं। उदाहरण के लिए, 2013 से 2018 के बीच पांच साल की अवधि में वैश्विक कच्चे तेल (भारतीय बास्केट) की कीमत लें। जनवरी 2013 में यह 110 अमेरिकी डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई, जबकि मार्च 2018 में कीमत घटकर 64 अमेरिकी डॉलर रह गई। इस बीच, जनवरी 2016 में कीमत घटकर 28 डॉलर रह गई थी। इस तथ्य पर विचार करते हुए कि इन पांच साल की अवधि में वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में 42 प्रतिशत की गिरावट आई थी, भारत में पेट्रोल की खुदरा कीमत वास्तव में आठ प्रतिशत और डीजल की खुदरा कीमत में 33 प्रतिशत की भारी वृद्धि हुई। यह तथाकथित तेल मूल्य विनियंत्रण के युग में अकल्पनीय है, जिसमें घरेलू खुदरा कीमतों को कच्चे तेल के थोक आयात लागतों से जोड़ा जाता है, जबकि सरकार अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि होने पर पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतों को बढ़ाने का कोई मौका नहीं छोड़ती है। सरकार ने खुदरा पेट्रोल और डीजल की कीमतों को विनियंत्रण करने के पीछे के उद्देश्य के बारे में लोगों को पूरी तरह से गुमराह किया है। यह धारणा बनाई गई है कि भारत में पेट्रोल और डीजल की खुदरा कीमतें वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों से जुड़ी हैं, जो पूरी तरह से गलत प्रतीत होती है। सिद्धांत रूप में, यदि कच्चे तेल की अन्तरराष्ट्रीय कीमतें गिरती हैं, जैसा कि 2022 की तीसरी तिमाही से काफी हद तक चलन रहा है, तो खुदरा तेल की कीमतें भी कम होनी चाहिए, और यदि अन्तरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें बढ़ती हैं तो भारत में भी खुदरा मूल्य बढ़ना चाहिए। हालांकि, व्यवहार में ऐसा नहीं हो रहा है। सबसे बड़े लाभार्थी सरकार द्वारा नियंत्रित तेल कंपनियां हैं, जो मोटा मुनाफा कमा रही हैं, और फिर सरकार है जिसका कर राजस्व बरकरार है। सरकार ने लोकसभा चुनाव से ठीक पहले 14 मार्च को पेट्रोल और डीजल की कीमतों में दो रुपये प्रति लीटर की कटौती की थी। यह पूरी तरह से एक राजनीतिक निर्णय था। इसका वैश्विक पेट्रोलियम कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट के रुझान से कोई लेना–देना नहीं था। खुदरा उपभोक्ताओं को बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़ रही है। दरअसल, सरकार के तेल मूल्य नियंत्रण तंत्र ने खुदरा तेल कीमतों को नियंत्रित करने में उसके हाथ को और मजबूत किया है। इससे उपभोक्ताओं से ज्यादा सरकार को फायदा होता है। जब वैश्विक तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो खुदरा तेल की कीमतें बढ़ जाती हैं और उपभोक्ताओं को अधिक भुगतान करना पड़ता है। जब वैश्विक कीमतें गिरती हैं, तो सरकार ईंधन पर कर और शुल्क जोड़ती है। उपभोक्ता और ईंधन खुदरा विक्रेता नुकसान में हैं। कोविड महामारी के दौरान, जब वैश्विक कच्चे तेल की कीमतें गिर गयीं, तो भारतीय उपभोक्ताओं को लाभ नहीं हुआ क्योंकि राज्य के स्वामित्व वाले तेल खुदरा विक्रेताओं ने 82 दिनों तक कीमतों में संशोधन करना बंद कर दिया था। जब कच्चे तेल की कीमतों में आंशिक रूप से सुधार हुआ, तो सरकार ने पेट्रोल और डीजल दोनों पर कर बढ़ा दिये। भले ही सरकार और तेल कंपनियां, ज्यादातर सरकारी स्वामित्व वाली, अच्छी कमाई कर रही हों, फिर भी उपभोक्ताओं को ईंधन की ऊंची कीमतें चुकानी पड़ रही हैं। तेल सह गैस क्षेत्र कुछ हद तक केंद्र और राज्य सरकारों दोनों के लिए दुधारू गाय की तरह है। यह कई तरीकों से सरकार के कर राजस्व में योगदान देता है। इनमें पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क, पेट्रोलियम उत्पादों पर सीमा शुल्क, कच्चे तेल पर रॉयल्टी, कॉर्पोरेट सह आयकर, पेट्रोलियम उत्पादों पर सेवा कर, कच्चे तेल पर उपकर और अधिभार शामिल हैं। वित्त वर्ष 2024 की पहली छमाही में तेल और गैस क्षेत्र ने सरकार के खजाने में 3.41 ट्रिलियन रुपये का योगदान दिया। इसमें राष्ट्रीय सरकार के लिए 1.85 ट्रिलियन रुपये और राज्यों के लिए 1.56 लाख करोड़ रुपये शामिल थे। पिछले एक दशक में भारतीय राज्यों के लिए पेट्रोलियम उत्पादों से कुल कर राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2014–15 में, राज्यों ने पेट्रोलियम करों से 1.37 लाख करोड़ रुपये एकत्र किये, जो 2023–24 में बढ़कर 2.92 लाख करोड़ रुपये हो गये।

कम खाना बढ़ती उम्र की सबसे अच्छी औषधि

रवीना टंडन

90 के दशक की जिन नायिकाओं ने ओटीटी आने के बाद अपने नए लटकों झटकों से अपने पुराने प्रशंसकों को फिर से लुभाया है, उनमें रवीना टंडन नंबर वन हैं। अब उनकी बेटी राशा भी हीरोइन बनने की राह पर है। उनकी दो गोद ली हुई बेटियां भी हैं। इस बार पेश हैं रवीना टंडन की खासमखास चार बातें.. मैं जैसी हूं, वैसी ही दिखती हूं मुझे कभी इस बात पर कोफ्त नहीं हुई कि मैं कैसी दिखती हूं। मुझे ईश्वर ने जैसा बनाया, जैसा रखा, मैंने हमेशा उस पर फख्र महसूस किया। स्कूल-कॉलेज के दिनों में मैं गोलू-मोलू थी तब भी और अब जबकि मैं 50 के पास हो चुकी हूं तब भी, मैंने खुद को स्वस्थ रखने के लिए सिर्फ व्रत का और शारीरिक व्यायाम का ही सहारा लिया। मेरा मानना है कि कम खाना बढ़ती उम्र की सबसे अच्छी औषधि है। बच्चों का अतिरिक्त ख्याल, विकास में बाधा हां, मैं चार बच्चों की मां हूं और देखा जाए तो नानी भी। लेकिन, मैंने कभी किसी बच्चे को ये नहीं बताया कि उसे क्या बनना चाहिए? माता-पिता का फर्ज मेरे हिसाब से यही है कि वह अपने बच्चों की भावनाओं को समझें, उनकी मेहनत की कद्र करें और जो वे बनना चाहते हैं, उसमें उनकी सहायता करें। बच्चों का अतिरिक्त ख्याल रखना भी कभी कभी उनके विकास में बाधक बनता है। राशा का अभिनेत्री बनने का फैसला उनका अपना राशा का अभिनेत्री बनने का फैसला उनका अपना है। मैंने तो कभी नहीं सोचा था मैं अभिनेत्री बनूंगी। मेरे पिता ही फिल्में बना रहे थे, मेरे दादाजी तो हाईकोर्ट के जज थे। घर में कोई डॉक्टर था। वकील तो बहुत सारे लोग थे। नानाजी फौज में। पापा की वजह से घर पर फिल्म सितारे खूब आते थे लेकिन हम कभी उनके आभा मंडल में नहीं आए। राशा की परवरिश भी ऐसी ही हुई है। उनको अपना ख्याल खुद रखना आता है, और ये सोचकर कभी कभी मैं खुद पर भी फख्र महसूस करती हूं। इस उम्र में भी खुद पर नाज करना जरूरी ओटीटी के आने के बाद से किरदारों की उम्र को लेकर दर्शकों की भी स्वीकार्यता बढ़ी है। अब 'अरण्यक' या 'कर्मा कॉलिंग' जैसी सीरीज में मेरी उम्र के मुताबिक किरदार लिखे जा रहे हैं तो मुझे इन्हें करने में भी दिक्कत नहीं होती। मैंने तो उम्र के साथ होने वाले सारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों को पूरे सम्मान के साथ अंगीकार किया है और दूसरों से भी मैं यही कहती हूं कि अगर अपनी जवानी पर हम इतराए हैं तो इस उम्र में भी हमें खुद पर नाज होना ही चाहिए। कम खाना बढ़ती उम्र की सबसे अच्छी औषधि मुख्य बिंदुरू वृद्धावस्था और आहाररू कम खाना और संतुलित आहार बढ़ती उम्र को नियंत्रित करने में सहायक हो सकता है। कम खाने का अर्थ यह नहीं है कि भोजन में पोषण की कमी हो, बल्कि स्वस्थ और संतुलित आहार के साथ सेवन की मात्रा कम करने का सुझाव है। रवीना टंडन और उनकी फिटनेसरू 90 के दशक की प्रमुख नायिकाओं में रवीना टंडन का नाम शामिल है, जिन्होंने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर वापसी के बाद अपने प्रशंसकों को फिर से प्रभावित किया है। रवीना टंडन ने अपनी फिटनेस और उम्र को लेकर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है, जो उनकी युवा दिखने की प्रक्रिया का हिस्सा है। बेटी राशारू रवीना की बेटी राशा टंडन भी फिल्म उद्योग में कदम रखने की तैयारी कर रही हैं।

मैंने तो उम्र के साथ होने वाले सारे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों को पूरे सम्मान के साथ अंगीकार किया है और दूसरों से भी मैं यही कहती हूं कि अगर अपनी जवानी पर हम इतराए हैं तो इस उम्र में भी हमें खुद पर नाज होना ही चाहिए।

गोद ली हुई बेटियांरू रवीना की दो गोद ली हुई बेटियां भी हैं, जिन्हें उन्होंने अपने परिवार का हिस्सा बनाया है।रवीना टंडन का योगदानरू फिटनेस और स्वास्थ्यरू रवीना टंडन ने अपनी फिटनेस के लिए नियमित व्यायाम और स्वस्थ आहार पर जोर दिया है, जो उनके युवा लुक को बनाए रखने में सहायक रहा है।प्रेरणारू उनकी उम्र और फिटनेस के प्रति दृष्टिकोण उन्हें एक प्रेरणास्त्रोत बनाता है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो उम्र के साथ अच्छे स्वास्थ्य और फिटनेस बनाए रखना चाहते हैं। संक्षेप मेंरू कम खाने और स्वस्थ आहार का पालन बढ़ती उम्र के प्रभावों को कम करने में मदद कर सकता है। रवीना टंडन का उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि सही जीवनशैली और फिटनेस पर ध्यान देने से उम्र को नियंत्रित किया जा सकता है। उनकी बेटी राशा और गोद ली हुई बेटियों के साथ रवीना का परिवार भी उनके जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, और उनके भविष्य के प्रयासों को लेकर उम्मीदें बनी हुई हैं।

अवनीत कौर ने वेकेशन एंजॉय करते हुए शेयर कीं ग्लैमरस फोटोज

अवनीत कौर व्हाइट कलर के लाइनिंग डिटेल्स वाले वास्कट टॉप और बैक से स्लिट वाली लॉन्ग स्कर्ट में एक से बढ़कर एक पोज देती नजर आ...

नम्रता मल्ला ने ब्रालेट में दिए किलर पोज, हर अदा है जानलेवा

नम्रता मल्ला प्रिंटेड ब्रालेट में किसी बगीचे में एक से बढ़कर एक हॉट पोज देती नजर आ रहीं हैं, क्या आपने देखीं...

निक्की तंबोली का वीडियो देख आहें भरने लगे फैंस, देखें हॉटनेस ओवरलोडेड

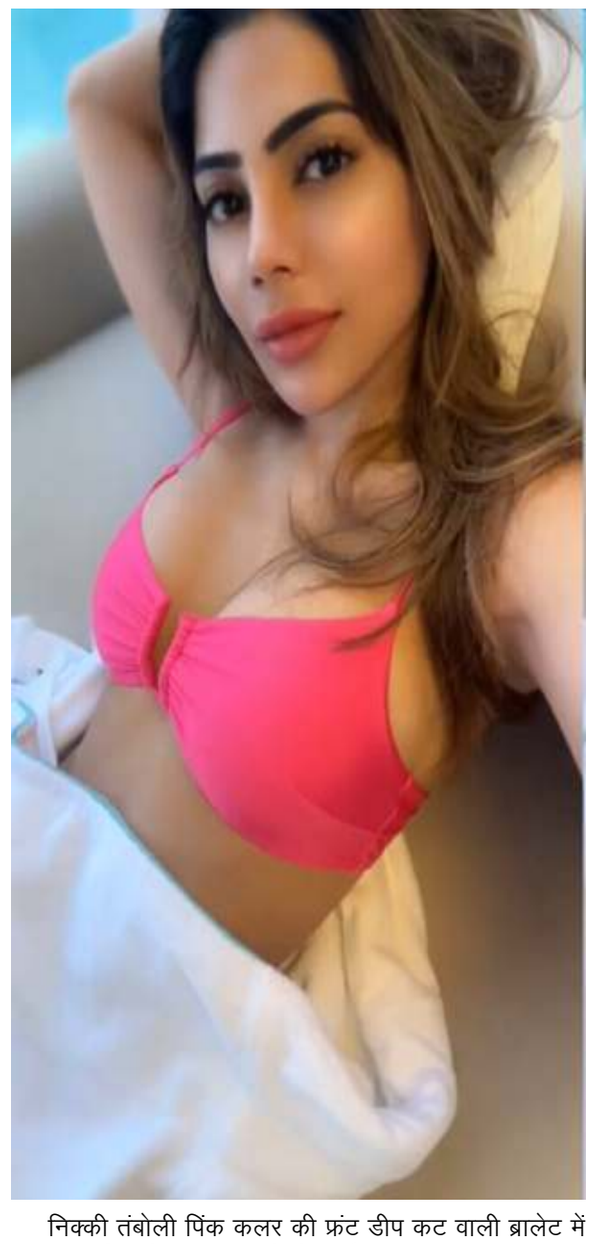

निक्की तंबोली पिंक कलर की फ्रंट डीप कट वाली ब्रालेट में गजब के सिजलिंग पोज देती दिखाई दे...

शिल्पा शिंदे से फिल्ममेकर ने की थी जबरदस्ती की कोशिश

मलयालम इंडस्ट्री पर जस्टिस हेमा कमेटी की रिपोर्ट सामने आने के बाद कई एक्ट्रेसेस अपने साथ हुए सेक्शुअल असॉल्ट के बारे में खुलकर बात कर रहे हैं। टीवी एक्ट्रेस शिल्पा शिंदे ने भी एक हिंदी फिल्ममेकर पर यौन शोषण के आरोप लगाए हैं हालांकि एक्ट्रेस ने फिल्ममेकर का नाम नहीं रिवील किया है। ऑडिशन के बहाने छेड़ने की कोशिश की न्यूज 18 शोशा को दिए इंटरव्यू में शिल्पा ने कहा, 1998-99 में स्ट्रगलिंग डेज के दौरान मेरे साथ यह घटना हुई थी। मैं उनका नाम नहीं ले सकती लेकिन उन्होंने मुझसे ऑडिशन के बहाने कहा, आप यह कपड़े पहनो और सीन करो। मैंने वो कपड़े नहीं पहने। सीन में मुझे उस फिल्ममेकर को रिझाने के लिए कहा गया। मैं तब बहुत नादान थी तो मैंने वो सीन किया। इसके बाद वो जब वो मुझसे जबरदस्ती करने पर उतारू होने लगे तो मैं डर गई। मैंने उन्हें धक्का दिया और वहां से भाग गई। सिक्योरिटी स्टाफ समझ गया कि मेरे साथ क्या हुआ है और उन्होंने मुझे जल्द से जल्द वहां से निकलने की सलाह दी। उन्हें लगा था कि मैं मदद के लिए हंगामा मचा दूंगी।

आलिया भट्ट और रणबीर कपूर बॉलीवुड की सबसे प्यारी जोड़ियों में से एक हैं. ये कपल अपनी बेटी राहा के साथ आलीशान जिंदगी गुजार रहा है. चाहे विदेशी छुट्टियों पर जाना हो या जमकर खरीदारी करना हो, ये जोडी अपन लाइफ को किंग साइज स्टाइल में जीना पसंद करते हैं. आखिरकार, वे बॉलीवुड के सबसे रोमांटिक कपल जो हैं.दोनों ही बी टाउन के टॉप एक्टर-एक्ट्रसे भी हैं. अब, उनके निजी शेफ ने कपूर परिवार के लिए पकाए गए भोजन की एक झलक शेयर है. जिसके ये जानकारी मिल गई है कि रणबीर और आलिया के घर मे क्या-क्या खाना बनता है. आलिया-रणबीर के घर में क्या खाना बनता है दरअसल द प्राइवेट शेफ्स क्लब के शेफ सूर्यांश सिंह कंवर ने हाल ही में आलिया और रणबीर के लिए काम किया और उनके साथ काम करने के अपने एक्सपीयिरंस के बारे में इंस्टाग्राम पर पोस्ट में भी बताया. इस दौरान उन्होंने ये भी खुलासा किया कि रणबीर और आलिया के घर रोज-रोज क्या खाना बनता है. सूर्यांश ने एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें रणबीर और आलिया के साथ उनकी तस्वीरें और बॉलीवुड जोड़े की रसोई में पकाए गए सभी टेस्टी डिशेज की फोटो भी शामिल है. एशियाई डिशेज से लेकर कुछ स्वादिष्ट मिठाइयों तक, आलिया और रणबीर का फूड मेनू पिछले कुछ दिनों में काफी दिलचस्प रहा है. वीडियो मेंआलिया की बिल्ली एडवर्ड भी नजर आती हैं. सूर्यांश ने वीडियो के साथ लिखा, षपिछले कुछ दिनों में रणबीरकपूर औरआलियाभट्ट के लिए कुछ मैजिकल किया! इस बेहद प्यारे जोड़े के लिए काम करके बहुत अच्छा समय बिताया! द प्राइवेट शेफ्स क्लब ष रणबीर कपूर वर्क फ्रंट इन सबके बीच रणबीर कपूर के वर्क फ्रंट की बात करें तो एक्टर की आखिरी रिलीज फिल्म साल 2023 की ब्लॉकबस्टर एनिमल थी. फिलम्म को संदीप रेडी वांगा ने निर्देशित किया था.

अंजीर के सेवन करने से शरीर को कई फायदे मिलते हैं। अंजीर स्वास्थ्यवर्धक गुणों के लिए जाना जाता है। इस लेख में हम आपको बताएंगे अंजीर खाने के फायदे क्या होते हैं, इसे आहार में शामिल करना काफी जरुरी है। अगर आप अंजीर को खाली पेट रोजाना खाते हैं तो इसके जबरदस्त फायदे होंगे।

अंजीर को अंग्रेजी में फिग कहते हैं। यह एक स्वादिष्ट और पोषक तत्वों से भरपूर फल है। इसके सेवन से हमारे शरीर में कई फायदे होते हैं। अंजीर में कई मुख्य पोषक तत्व होते हैं। इसमें पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, तांबा, अंजीर में मौजूद पोषक तत्वों की बात करें तो इसमें पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, तांबा, आयरन, विटामिन ए, विटामिन के और विटामिन एल जैसे एंटीऑक्सिडेंट होते हैं जो शरीर को हेल्दी रखता है। भिगोकर अंजीर के सेवन करने से बॉडी को मिलते ये फायदे।

डायबिटीज नियंत्रित रखता

अंजीर का सेवन करने से डायबिटीज को कंट्रोल करने में काफी मदद मिलती है। रात के समय 3–4 अंजीर भिगोकर रख दें, इसके बाद रोजाना सुबह इसके सेवन करने से ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल होता है।

हीमोग्लोबिन बढ़ता है

अंजीर एक अमृत फल है इसमें कई सारे पोषक तत्व पाएं जाते है। अंजीर में आयरन, पोटैशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, तांबा और विटामिन ई जैसे पोषक तत्व होते हैं। रोजाना खाली पेट भीगे हुए अंजीर खाने से शरीर में हीमोग्लोबिन बढ़ता है। अंजीर को आप दूध के साथ भी खा सकते हैं।

कैंसर से लड़ता

अंजीर में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स होता है जो कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों से लड़ने में मदद करता है। प्रतिदिन सुबह भीगे हुए अंजीर के सेवन से खतरनाक बीमारियों से बचा जा सकता है।

हड्डियां मजबूत होती

अंजीर में कैल्शियम, पौटेशियम और मैग्नीशियम होता है जो हड्डियों को मजबूत करता है और सूजन को भी कम करता है। भीगे हुए अंजीर खाने से आपकी हड्डियां मजबूत बनेंगी।

पाचन तंत्र बेहतर होता है

अगर आप रोजाना भीगे हुए अंजीर का सेवन करते हैं तो पाचन संबंधित समस्याओं से राहत मिलती है। इसका सेवन करने से आंतों को पोषण मिलता है। क्योंकि इसमें घुलनशील फाइहर से भरपूर अंजीर पेट को साफ करता है और बॉडी को हेल्दी रखता है। आंतों की सेहत को दुरुस्त करने में अंजीर बेहद फायदेमंद होता है। कब्ज से राहत पाने के लिए खाली पेट 2 से 3 सूखे अंजीर का सेवन करें।

डिस्क्लेमररू इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

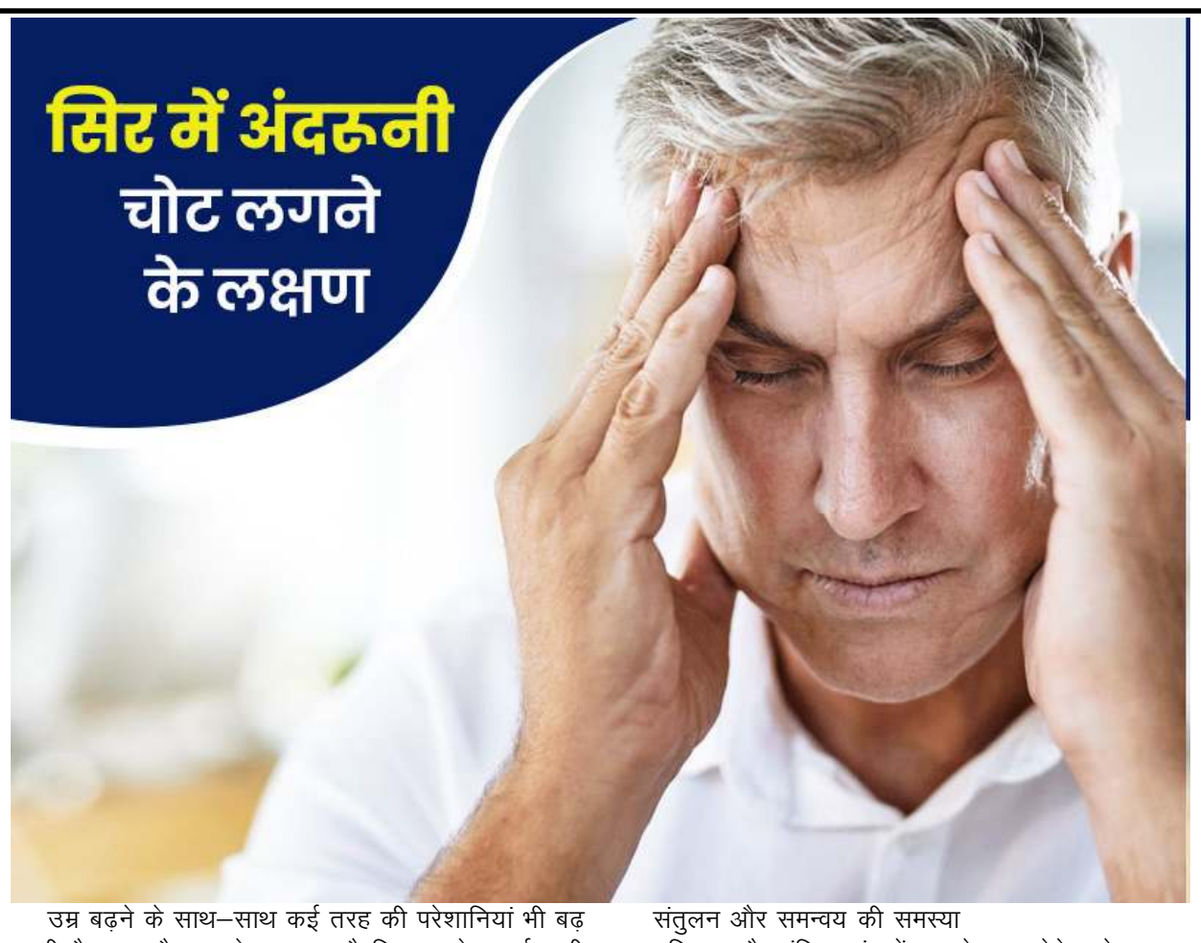

उम्र बढ़ने के साथ–साथ कई तरह की परेशानियां भी बढ़ जाती है। आमतौर पर देखा जाता है कि घर के बुजुर्ग कभी बाथरूम में फिसल जाते हैं या फिर चलते–चलते सड़क पर गिर जाते हैं। बुजुर्गों के बार–बार गिरने के पीछे कई शारीरिक और स्वास्थ्य संबंधी कारण हो सकते हैं। उम्र के साथ मांसपेशियों की कमजोरी, संतुलन की कमी, और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं बुजुर्गों में गिरने का जोखिम बढ़ा देती हैं। बार–बार गिरने से न केवल शारीरिक चोटें हो सकती हैं, बल्कि आत्मविश्वास में कमी और मानसिक तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। गिरने के कारणों को समझना और उनकी सेहत का ख्याल रखना बहुत जरूरी है।

बुजुर्गों के गिरने के मुख्य कारण

मांसपेशियों की कमजोरी

उम्र के साथ मांसपेशियों की ताकत और लचीलापन कम हो जाता है। इससे चलते समय संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो जाता है, और बुजुर्गों के गिरने की संभावना बढ़ जाती है।

संतुलन और समन्वय की समस्या

मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र में उम्र के साथ होने वाले बदलाव से संतुलन और समन्वय में समस्या हो सकती है। इससे चलते या उठते समय असंतुलन महसूस होता है, और गिरने का खतरा बढ़ जाता है।

जोड़ों की समस्या

गठिया या जोड़ों में सूजन, दर्द, और जकड़न चलते समय संतुलन बिगाड़ सकते हैं। घुटने और कूल्हे के जोड़ों में दर्द के कारण बुजुर्ग चलने में परेशानी महसूस करते हैं।

दृष्टि संबंधी समस्याएं

दृष्टि कमजोर हो जाने से रास्ता साफ नहीं दिखता, और यह गिरने का प्रमुख कारण हो सकता है। मोतियाबिंद या ग्लूकोमा जैसी आंखों की बीमारियां भी इसका कारण हो सकती हैं।

लो ब्लड प्रेशर

अचानक से खड़े होने पर ब्लड प्रेशर में गिरावट हो सकती है, जिससे चक्कर आना और संतुलन खोना संभव होता है। इसे ऑर्थोस्टेटिक हाइपोटेंशन कहा जाता है।

दवाइयों का प्रभाव

बुजुर्गों द्वारा ली जाने वाली कुछ दवाइयों के कारण चक्कर आना, थकान, या मांसपेशियों की कमजोरी हो सकती है, जिससे गिरने का जोखिम बढ़ता है। विशेष रूप से, उच्च रक्तचाप, नींद की गोलियां, या एंटी–डिप्रेसेंट्स का प्रभाव हो सकता है।

कमजोर हड्डियां

ऑस्टियोपोरोसिस जैसी स्थितियां हड्डियों को कमजोर बना देती हैं, जिससे मामूली गिरावट भी गंभीर चोट का कारण बन सकती है।

बुजुर्गों की सेहत का ध्यान कैसे रखें

नियमित व्यायाम और फिजियोथेरेपी

मांसपेशियों को मजबूत बनाने और संतुलन में सुधार करने के लिए बुजुर्गों को नियमित हल्का व्यायाम कराना जरूरी है। योग और ताई ची जैसी गतिविधियां संतुलन और लचीलापन बढ़ाने में मदद कर सकती हैं।फिजियोथेरेपी भी संतुलन सुधारने और गिरने से बचने में सहायक हो सकती है।

घर में सुरक्षा उपाय

घर के फर्श पर बिछाई गई कालीन या गलीचे को फिसलने से रोकने के लिए अच्छी तरह से फिट करें। बाथरूम और सीढ़ियों के पास हैंडल बार्स (हैंडरेल) लगाएं ताकि संतुलन बनाए रखने में मदद मिले। घर में रोशनी का उचित प्रबंध करें ताकि रात में या कम रोशनी में भी बुजुर्गों को रास्ता साफ दिखे।

नियमित स्वास्थ्य जांच

बुजुर्गों को नियमित रूप से डॉक्टर से मिलकर उनके ब्लड प्रेशर, आंखों की जांच, हड्डियों की मजबूती, और दवाइयों के साइड इफेक्ट्स की जानकारी लेनी चाहिए। विटामिन डी और कैल्शियम सप्लिमेंट्स से हड्डियों को मजबूत रखने में मदद मिल सकती है।

हेल्थी डाइट

पोषक तत्वों से भरपूर आहार बुजुर्गों की मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है। आहार में कैल्शियम, विटामिन डी, प्रोटीन, और अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का समावेश करें।

दवाओं का सही उपयोग

दवाइयों के संभावित साइड इफेक्ट्स के बारे में डॉक्टर से सलाह लें। अगर कोई दवा बुजुर्गों में कमजोरी या चक्कर का कारण बन रही हो, तो डॉक्टर से इसके बारे में चर्चा करें और दवाइयों की खुराक या प्रकार बदलवाएं।

फुटवियर का सही चुनाव

बुजुर्गों को आरामदायक और सही साइज का फुटवियर पहनना चाहिए, जिससे चलने में सुविधा हो और फिसलने का खतरा कम हो।

विटामिन बी12 शरीर के लिए सबसे जरुरी पोषक तत्व है। विटामिन बी 12 शरीर में कई मुख्य कार्य करता है जैसे कि रेड ब्लड सेल्स का निर्माण, नर्वस सिस्टम को हेल्दी रखना और डीएनए का निर्माण करने में मदद। आइए जानते हैं विटामिन बी12 की कमी को दूर करने के लिए किन फूड्स का सेवन करना चाहिए।

अगर शरीर को जरुरी पोषक तत्व न मिले तो शरीर एकदम से सुखने लगता है। विटामिन बी12 हमारी बॉडी के लिए आवश्यक पोषक तत्व है, जो शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ मानसिक हेल्थ के लिए भी आवश्यक है। वहीं, आपके शरीर मे विटामिन बी12 कमी हुई तो यह नर्वस सिस्टम और ब्रेन फंक्शन में गिरावट हो सकती है। जिसके चलते आपको कमजोरी, थकान, मेमोरी लॉस और डिप्रेशन जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। विटामिन बी12 की कमी का खतरा सबसे ज्यादा शाकाहारी होता है। वो इसलिए यह विटामिन आमतौर पर पशु के उत्पादों में पाया जाता है। लेकिन आप शाकाहारी फूड्स का सेवन करने से विटामिन बी12 की कमी से बच सकते हैं।

यह वीनर्स नकली दांतों से 300 गुना बेहतर है! और कीमत बहुत सस्ती हैऔर जानें

दही

रोजाना आप सही मात्रा में दही का सेवन करते हैं, तो आप शाकाहारियों के लिए इस विटामिन बी12 खाद्य पदार्थ से अपनी जरुरतों को पूरा कर सकते हैं। आप चाहे तो लस्सी भी पी सकते हैं।

स्विस पनीर

शाकाहारियों वालों के लिए विटामिन बी12 की कमी से बचने के लिए अपनी डाइट में स्विस पनीर एड कर सकते है। विशेष तौर पर स्विस पनीर खाने से कई फायदा मिलता है। स्विस पनीर 50 ग्राम में लगभग 1.5 एमसीजी विटामिन बी12 प्रदान करता है।

पनीर

अगर आप विटाविन बी12 की कमी दूर करना चाहते हैं, तो आप रोजाना पनीर खाएं। पनीर खाने से कम से कम 20: विटामिन बी12 प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, अगर आप 100 ग्राम पनीर में लगभग 0.8 डब्ल विटामिन बी12 होता है। यह एक वयस्क के रुप में आपको जितनी मात्रा की जरुरत होगी उसका एक तिहाई है।

डिस्क्लेमररू इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

हम आपको बताने जा रहे हैं कि प्रेग्नेंसी के फर्स्ट ट्राइमेस्टर में किन–किन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। एक्सपर्ट के हिसाब से प्रेग्नेंसी के पहली तीन महीनों में बैलेंस डाइट लेना चाहिए। यह मां और बच्चे के सेहत पर असर डालता है।

प्रेग्नेंसी में शुरूआती तीन महीने काफी ज्यादा नाजुक होते हैं। इस दौरान महिलाओं को अपनी सेहत का खास ख्याल रखना चाहिए। वरना इसका सीधा असर बच्चे पर पड़ता है। क्योंकि प्रेग्नेंसी के फर्स्ट ट्राइमेस्टर में महिलाओं को कुछ चीजों को नहीं खाना चाहिए। क्योंकि सेहत के प्रति लापरवाही करने से प्रेग्नेंसी के दौरान बच्चे की जान पर भी खतरा हो सकता है। प्रेग्नेंसी का टेस्ट पॉजिटिव आने के बाद महिलाओं को अपनी डाइट का ख्याल रखना चाहिए।

क्योंकि महिलाओं की डाइट बच्चे के विकास के लिए बेहद जरूरी होता है। लेकिन क्या आप जानती हैं कि प्रेग्नेंसी में कुछ चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। इससे मां और बच्चे की सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि प्रेग्नेंसी के फर्स्ट ट्राइमेस्टर में किन–किन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। एक्सपर्ट के हिसाब से प्रेग्नेंसी के पहली तीन महीनों में बैलेंस डाइट लेना चाहिए। क्योंकि यह मां और बच्चे के सेहत पर सीधा असर डालता है। प्रेग्नेंसी के शुरूआती दौर में इन चीजों से दूरी बनाए रखना चाहिए।

फर्स्ट ट्राइमेस्टर में न करें इन चीजों का सेवन

कच्चा और अधपका मांस

प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को कच्चा, अधपका, चिकन और अंडों का सेवन नहीं करना चाहिए। क्योंकि इन चीजों में हानिकारक बैक्टीरिया पाई जाती है। जिसके कारण आपको कई गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। जोकि बच्चे और मां दोनों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। एक्सपर्ट के अनुसार, प्रेग्नेंसी की शुरूआत में कच्चे अंडे से बनी चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए।

कुछ तरह की फिश

वैसे तो फिश प्रोटीन, ओमेगा 3 और फैटी एसिड का बेहतरीन सोर्स है। लेकिन कई फिशेज में हाई लेवल मर्करी पाया जाता है। जो बच्चे के नर्वस सिस्टम के विकास में नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए प्रेग्नेंसी में स्वॉर्डफिश, किंग मैकेरल, शार्क और और टाइलफिश का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि प्रेग्नेंसी में फिश खाना चाहती हैं, तो आपको सार्डिनेस, सेलमन और ट्राउट फिश का सेवन करना चाहिए।

अपाश्चुरीकृत डेयरी प्रोडक्ट

इसके अलावा प्रेग्नेंसी में अपाश्चुरीकृत दूध और डेयरी प्रोडक्ट भी नहीं खाना चाहिए। क्योंकि इसमें कई तरह की सॉफ्ट चीजें शामिल होती है। सॉफ्ट चीजों में लिस्टेरिया बैक्टीरिया हो सकती है, जोकि इंफेक्शन के अलावा मिसकैरेज और स्टिलबर्थ की समस्या पैदा कर सकता है। इसलिए प्रेग्नेंसी के फर्स्ट ट्राइमेस्टर में पाश्चुरीकृत डेयरी प्रोडक्ट्स का सेवन करना चाहिए।

कच्ची शेलफिश

प्रेग्नेंसी में कच्ची और अधपकी शेलफिश का सेवन नहीं करना चाहिए। शेलफिश में हानिकारक बैक्टीरिया और पैरासाइट हो सकते हैं, जो फूड पॉइजनिंग और अन्य बीमारियां हो सकती है। एक्सपर्ट के मुताबिक जब तक शेलफिश

कैफीन

बता दें कि प्रेग्नेंसी के फर्स्ट ट्राइमेस्टर में अधिक कैफीन का सेवन करने से मिसकैरिज और लो–बर्थ वेट की समस्या हो सकती है। प्रेग्नेंसी के दौरान एक दिन में 200उह कैफीन के सेवन करने की सलाह दी जाती है। एक्सपर्ट के मुताबिक चॉकलेट, चाय, सोडा और एनर्जी ड्रिंक्स में कैफीन पाया जाता है। प्रेग्नेंसी में हेल्दी डाइट के साथ हेल्दी मॉर्निंग रूटीन फॉलो करना चाहिए।

एल्कोहल

प्रेग्नेंसी में महिलाओं को एल्कोहल का सेवन नहीं करना चाहिए। खासकर फर्स्ट ट्राइमेस्ट में एल्कोहल का सेवन करने से बच्चे के दिमाग के विकास पर असर पड़ता है।

फल और सब्जियां

प्रेग्नेंसी में डाइट में फल और सब्जियां शामिल करने की सलाह दी जाती है। लेकिन ध्यान रखें कि प्रेग्नेंसी में बिना धुले फल और सब्जियों का सेवन न करें। क्योंकि बिना धुले फल और सब्जियों पर कई तरह के बैक्टीरिया और पेस्टिसाइड मौजूद होते हैं। जिससे आपको इंफेक्शन का खतरा होता है। इसलिए प्रेग्नेंसी में सुपरहेल्दी फूड्स का सेवन करना चाहिए।

प्रेग्नेंट महिलाओं को अनानास और कच्चा पपीता नहीं खाना चाहिए।

क्योंकि इसमें कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं, जिनसे आपको उल्टी की समस्या हो सकती है। इन फलों के सेवन से फर्स्ट ट्राइमेस्टर में ब्लीडिंग हो जाती है। वहीं प्रेग्नेंसी के दूसरे और तीसरे ट्राइमेस्टर में प्री–मैच्योर लेबर दर्द की परेशानी भी हो सकती है। प्रेग्नेंसी में किसी भी तरह की समस्या होने पर डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए।

डिस्क्लेमररू इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

संक्षिप्त

दुनिया के सबसे खतरनाक बॉडी बिल्डर illia Golem yefimchyk की मौत, 36 की उम्र में आया हार्ट अटैक

दुनिया के ताकतवर बॉडी बिल्डर इलिया गोलेम येफिमचेक की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वह महज 36 साल के थे। 6 सितंबर को दिल का दौरा पड़ने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां वह कोमा में चले गए थे। रिपोर्ट्स के अनुसार इस बेलारुसी बॉडी बिल्डर इलिया गोलेम येफिमचेक की मौत 11 सितंबर को हुई थी। लेकिन मीडिया डेली मेल के मुताबिक हार्ट अटैक आने पर पत्नी एना ने बॉडी बिल्डर को सीपीआर दिया था। इसके बाद उन्हें हैलीकॉप्टर की मदद से अस्पताल ले जाया गया था। पति की मौत के बाद एना टूट गईं। उन्होंने कहा कि दुख की घड़ी में काफी लोगों ने हमारा साथ दिया। मैं उनका दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। मुझे लगता है कि मैं दुनिया में अकेली नहीं हूं। मुझे बहुत लोगों से समर्थन मिल रहा है। बता दें कि, इलिया गोलेम ने किसी भी प्रोफेशनल खेल में भाग नहीं लिया था। लेकिन सोशल मीडिया पर उन्हें काफी पसंद किया जाता है। उन्हें द म्यूटेंट नाम मिला। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इलिया गोलेम की डाइट काफी थी। वह दिन में 7 बार खाना खाते थे। उनका वजन 340 पाउंड था। जबकि हाइट 6 फीट एक इंच थी।

वरिष्ठ वकील हरीश साल्वे ने विनेश फोगाट को लेकर किया बड़ा खुलासा, जानें क्या कहा?

पहलवानी छोड़ राजनीति में कदम रखने वाली विनेश फोगाट को लेकर वकील हरीश साल्वे ने बड़ा खुलासा किया है। दरअसल, साल्वे ने कहा कि, पेरिस ओलंपिक 2024 में सिल्वर मेडल की अपील के खिलाफ CAS (कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट) के फैसले को इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस (ICJ) में चुनौती देना मना कर दिया था। बता दें कि, विनेश ओलंपिक में तय मानक वजन ज्यादा होने के कारण महिलाओं की फ्रीस्टाइल 50 किलो कुश्ती इवेंट के फाइनल में डिसक्वालिफाई हो गई थीं। डिस्क्वालिफाई होने के बाद विनेश ने CAS में इस फैसले के खिलाफ अपील दायर की थी। कुलभूषण जाधव मामले में ICJ में भारत का केस लड़ने वाले हरीश साल्वे ने कोर्ट में विनेश का प्रतिनिधित्व किया, जो भारतीय ओलंपिक संघ की ओर से उनका केस लड़ रहे थे। एक हफ्ते तक चली सुनवाई के बाद फैसला विनेश फोगाट के पक्ष में नहीं आया। उन्हें पेरिस से खाली हाथ लौटना पड़ा। हाल ही में हरियाणा में जन्मी विनेश ने आईओए अध्यक्ष पीटी उषा, मोदी सरकार और रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्य संजय सिंह पर निशाना साधा था। इस दौरान विनेश ने कहा था कि सरकार और भारतीय ओलंपिक संघ ने उन्हें कोई मदद नहीं की। वहीं वकील हरीश साल्वे ने बताया कि उन्होंने इस केस को बहुत मुश्किल से लड़ा और उन्होंने विनेश को सीएएस के फैसले के खिलाफ स्विस कोर्ट में अपील करने का प्रस्ताव भी दिया था। लेकिन वह इसे आगे बढ़ाने की इच्छुक नहीं थीं। उन्होंने कहा कि, बाद में हमें सब कुछ मिला और हमने कड़ी लड़ाई लड़ी। वास्तव में, मैंने उस महिला को ये भी प्रस्ताव दिया कि हम इस फैसले को स्विस कोर्ट में चुनौती दे सकते हैं, लेकिन वकीलों ने मुझे बताया कि वह इसे आगे नहीं बढ़ाना चाहती थीं।

अपीलीय न्यायाधिकरण ने रिलायंस कैपिटल की याचिका पर आईआईएचएल को नोटिस जारी किया

नयी दिल्ली । राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) ने रिलायंस कैपिटल के कर्जदाताओं की याचिका पर इंडसइंड इंटरनेशनल होल्डिंग्स लिमिटेड (आईआईएचएल) को नोटिस जारी किया। कर्जदाताओं ने याचिका में भुगतान में लगने वाले समय के लिए ब्याज लेने की अनुमति देने का आग्रह किया है। चेयरपर्सन न्यायमूर्ति अशोक भूषण की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ ने हिंदुजा समूह की कंपनी आईआईएचएल को दो सप्ताह के भीतर जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। एनसीएलएटी आरकैप के कर्जदाताओं की समिति (सीओसी) की याचिका पर सुनवाई कर रही है। ऋणदाताओं ने राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) की मुंबई पीठ द्वारा पारित आदेश में संशोधन का अनुरोध किया है। पीठ ने 23 जुलाई को आईआईएचएल को सीओसी एस्क्रो (विशेष खाता) खातों में 2,750 करोड़ रुपये इक्विटी राशि जमा करने का निर्देश दिया था। इसने अपीलीय न्यायाधिकरण से अनुरोध किया है कि वह आईआईएचएल को आठ अगस्त, 2024 तक अग्रिम नकद राशि पर ब्याज लेने की अनुमति देने का निर्देश दे। साथ ही 9,660 करोड़ रुपये की अग्रिम नकद राशि के कर्ज राशि पर आठ अगस्त, 2024 से हस्तांतरण तिथि तक ब्याज की अनुमति दे, जो अग्रिम नकद राशि के भुगतान की तिथि है। मॉरीशस स्थित आईआईएचएल रिलायंस कैपिटल (आरकैप) के अधिग्रहण के लिए सफल बोलीदाता के रूप में उभरी। एनसीएलटी–मुंबई ने 27 फरवरी, 2024 को कर्ज में डूबी वित्तीय कंपनी के लिए आईआईएचएल की 9,861 करोड़ रुपये की समाधान योजना को मंजूरी दी थी। ऋणदाताओं ने 'चूक होने पर सीओसी विशेष खाते (2,750 करोड़ रुपये) में पड़ी धनराशि को जब्त करने' की भी अनुमति देने का आग्रह किया है। एनसीएलटी ने आठ अगस्त को आईआईएचएल को निर्देश दिया था कि वह 48 घंटे के भीतर आरकैप के ऋणदाताओं के खातों में 2,750 करोड़ रुपये हस्तांतरित करे।

भारत की मजबूत बुनियाद को बताता है आर्थिक वृद्धि परिदृश्य : आरबीआई गवर्नर

सिंगापुर । भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकान्त दास ने कहा कि भारत का वृद्धि परिदृश्य देश के वृहद आर्थिक बुनियाद कीमजबूती को बताता है। उन्होंने कहा कि इसमें निजी उपभोग और निवेश जैसे घरेलू तत्व प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने ब्रेटन वुड्स कमेटी, सिंगापुर द्वारा आयोजित 'फ्यूचर ऑफ फाइनेंस फोरम 2024' में कहा कि देश की आर्थिक वृद्धि को वृहत आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के माहौल का समर्थन है। दास ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड–19 महामारी के कारण आए गंभीर संकट से उबर गई और इसकी 2021–24 के दौरान औसत वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर आठ प्रतिशत से अधिक रही। चालू वित्त वर्ष (2024–25) के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वास्तविक जीडीपी यानी आधार मूल्य पर वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है।

टीम इंडिया के बल्लेबाजों को बांग्लादेश के स्पिन गेंदबाजों से निपटना होगा बड़ी चुनौती, जानें चेन्नई के पिच कैसी होगी?

19 सितंबर से शुरू होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ तैयारी शुरू कर दी है। दरअसल, चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में भारत–बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट खेला जाएगा। एक महीने के ब्रेक के बाद भारतीय टीम का शेड्यूल काफी व्यस्त रहने वाला है। अगले 4 महीने में भारतीय टीम को 10 टेस्ट खेलने हैं। 5 टेस्ट घर में बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के खिलाफ। वहीं 5 टेस्ट ऑस्ट्रेलिया में खेलने हैं।

द इंडियन एक्स्प्रेस के अनुसार भारतीय टीम ने शुक्रवार को बांग्लादेश के खिलाफ पहली बार नेट प्रैक्टिस की। हाल के समय में भारतीय बल्लेबाजों को स्पिन गेंदबाजों ने बहुत परेशान किया। चेन्नई में पहले दिन बल्लेबाजों ने स्पिनर्स के खिलाफ नेट्स में खूब पसीना बहाया। हालांकि, बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट में तेज गेंदबाजों के मुफीद परिस्थितियां हो सकती हैं। लाल मिट्टी पिच का इस्तेमाल हो सकता है।

भारत ने अपने नेट गेंदबाजों को बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के अटैक को देखते हुए चुना है। बांग्लादेश के दो बाएं हाथ के स्पिनर शाकिब अल हसन, ताइजुल इस्लाम और न्यूजीलैंड के पास एजाज पटेल, मिशेल सेंटनर और रचिन रविंद्र हैं, जो सभी ट्रैजेक्टरी और रिलीज पॉइंट के मामले में अलग–अलग चुनौतियां पेश करते हैं। रविंजडेजा और अक्षर पटेल के अलावा तमिलनाडु के एस अजित राम, एम सिद्धार्थ और पी विग्नेश उपलब्ध हैं। ऑफ स्पिनर्स ने काफी परेशानी पेश की। ऐसे में आर अश्विन के अलावा बल्लेबाजों

ने तमिलनाडु के लक्ष्य जैन और मुंबई के अश्विन–क्लोन हिमांशु सिंह का सामना किया।

चेन्नई की पिच बांग्लादेश को अपने घरेलू मैदान पर काली मिट्टी वाली पिचों पर खेलने की आदत है, जो आमतौर पर धीमी होती हैं। जिस कारण भारत पहला टेस्ट ऐसी पिच पर खेलेगा जो लाल मिट्टी से बनी होगी। हालांकि, टेस्ट के लिए अभी पांच दिन बाकी हैं, ऐसे में पिच पर अच्छी घास थी, जिसे मैदानकर्मियों ने सुबह 11.30 बजे ही ढक दिया था ताकि वह टूट न जाए।

प्याज की कीमतों को कम करने के लिए केंद्र सरकार ने लिया बड़ा फैसला, न्यूनतम निर्यात मूल्य सीमा घटाई

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने देश से निर्यात को बढ़ावा देने और किसानों की आमदनी में इजाफा करने के उद्देश्य से बड़ा फैसला लिया है। इसके तहत शुक्रवार से प्याज और बासमती चावल के न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) पर लगी सीमाओं को हटाया गया है। सरकार के इस फैसले से कृषि गतिविधियों में किसानों को राहत मिलेगी। वहीं महाराष्ट्र और हरियाणा में आगामी महीनों में होने वाले चुनावों के लिहाज से ये काफी महत्वपूर्ण रहने वाला है। गौरतलब है कि हरियाणा बासमती चावल का प्रमुख उत्पादक राज्य माना जाता है। वहीं महाराष्ट्र देश का प्याज उत्पादक राज्यों में सबसे आगे है। प्याज पर न्यूनतम निर्यात मूल्य को 550 डॉलर प्रति टन तय किया गया था। वहीं विदेश व्यापार महानिदेशालय ने इस संबंध में एक अधिसूचना जारी की है। इसमें कहा गया है कि इसे तत्काल प्रभाव से हटा दिया गया है। वहीं वाणिज्य विभाग ने भी बासमती चावल के निर्यात के लिए पंजीकरण सह आवंटन प्रमाण पत्र जारी करने का निर्णय लिया है। इसके लिए 950 डॉलर टन के मौजूदा न्यूनतम निर्यात मूल्य हो हचाया जाएगा। इस संबंध में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि इस कदम से निर्यात प्रोत्साहन और किसानों की आमदनी में मदद मिलेगी। एपीडा (कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरध) से इस निर्णय को लागू करने के लिए तत्काल कदम उठाने का अनुरोध किया है। इस दौरान एपीडा बासमती निर्यात के लिए किसी भी अवास्वतिक मूल्य पर होने वाले निर्यात अनुबंध पर करीब से नजर रखेगा। सरकार ने पिछले साल अक्टूबर की शुरुआत में बासमती चावल के निर्यात के लिए न्यूनतम कीमत को 1,200 डॉलर प्रति टन से घटाकर 950 डॉलर प्रति टन कर दिया था। अधिक कीमतों के कारण निर्यात प्रभावित होने की चिंताओं के चलते ऐसा किया गया था। सरकार ने 27 अगस्त, 2023 को प्रीमियम बासमती चावल की आड़ में सफेद गैर–बासमती चावल के अवैध निर्यात पर लगाम लगाने के लिए 1,200 अमेरिकी डॉलर प्रति टन से कम कीमत पर बासमती चावल के निर्यात की अनुमति नहीं देने का फैसला किया था। भारत का बासमती चावल का कुल निर्यात 2022–23 में कीमत के लिहाज से 4.8 अरब डॉलर रहा, जबकि मात्रा के लिहाज से यह 45.6 लाख टन था। इस बीच, विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने प्याज निर्यात की न्यूनतम मूल्य सीमा हटाने वाली अधिसूचना में कहा, "प्याज के निर्यात पर न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) की शर्त तत्काल प्रभाव से और अगले आदेश तक हटा दी गई है।" इस प्रमुख रसोई के खाद्य सामग्री की उच्च खुदरा कीमतों के बावजूद प्याज पर एमईपी को हटाने का निर्णय लिया गया है। उपभोक्ता मामलों के विभाग द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, शुक्रवार को प्याज का अखिल भारतीय औसत मूल्य 50.83 रुपये प्रति किलोग्राम था, जबकि मॉडल मूल्य 50 रुपये प्रति किलोग्राम है। प्याज का अधिकतम मूल्य 83 रुपये प्रति किलोग्राम है और न्यूनतम मूल्य 28 रुपये प्रति किलोग्राम है।

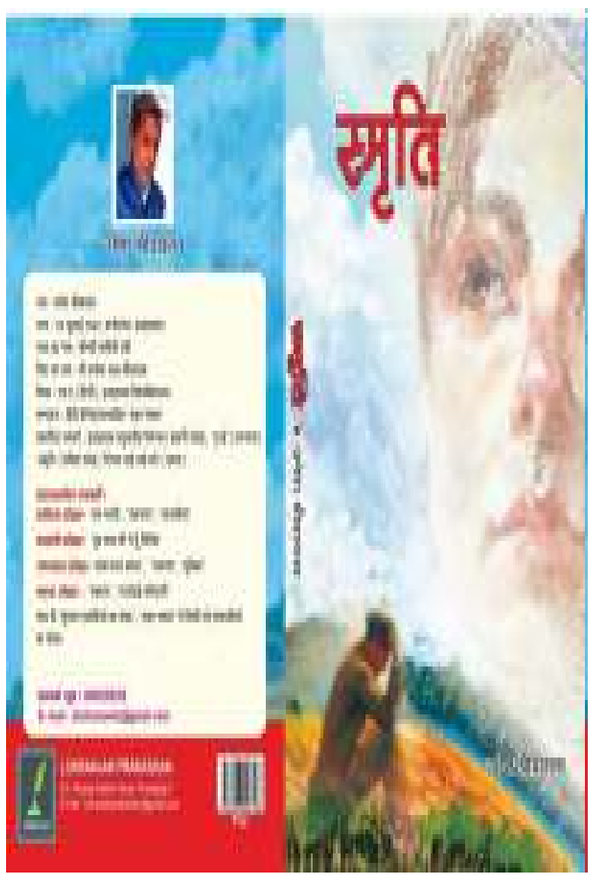

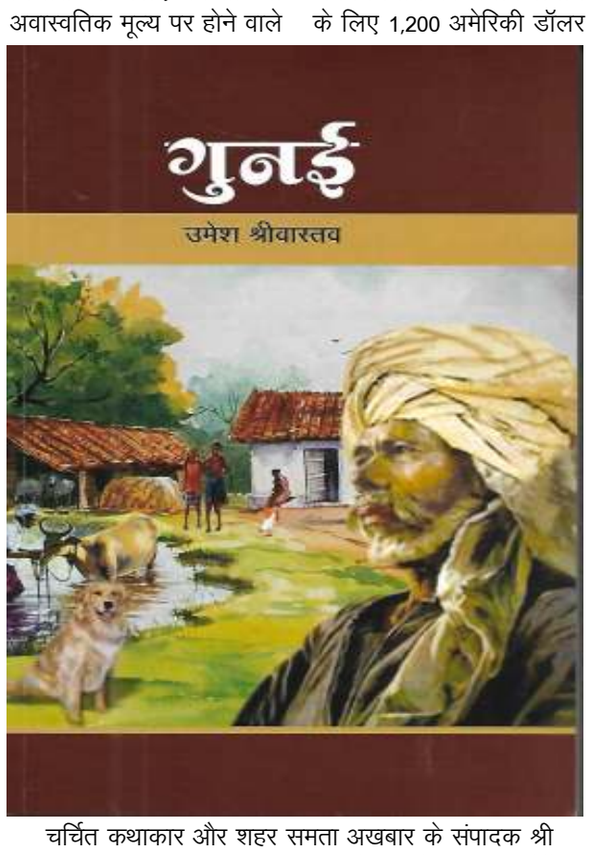

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित उपन्यास गुनई अमेजन पर उपलब्ध हो गया है। पुस्तक

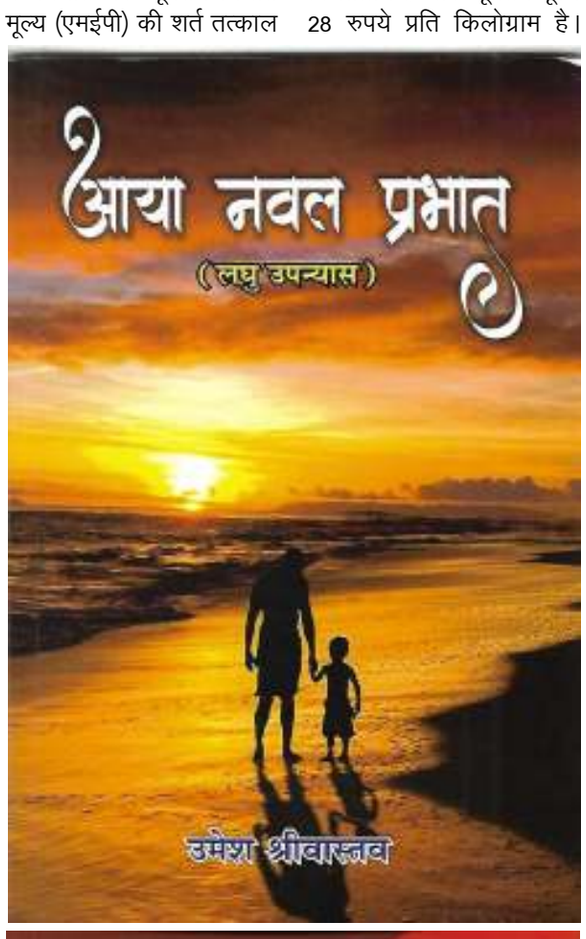

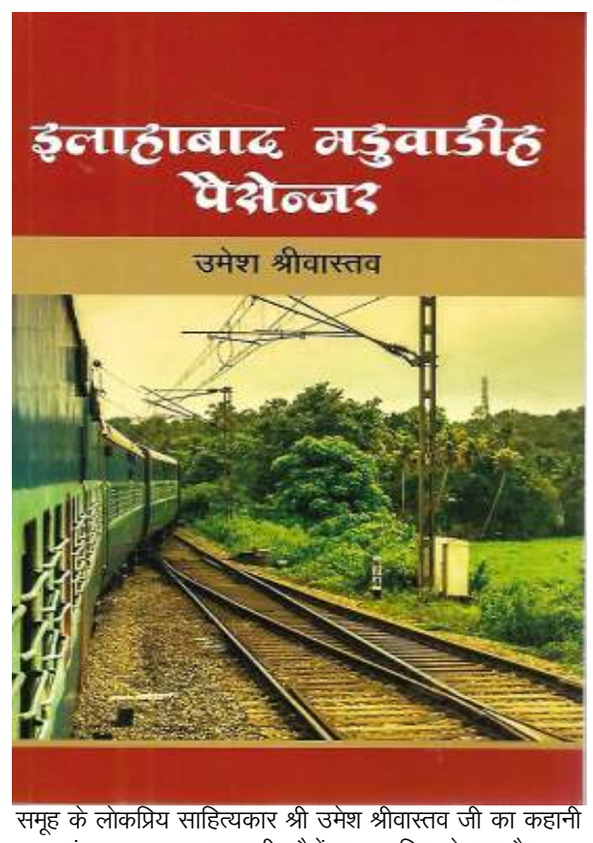

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना। पुस्तक अमेजन पर उपलब्ध है।

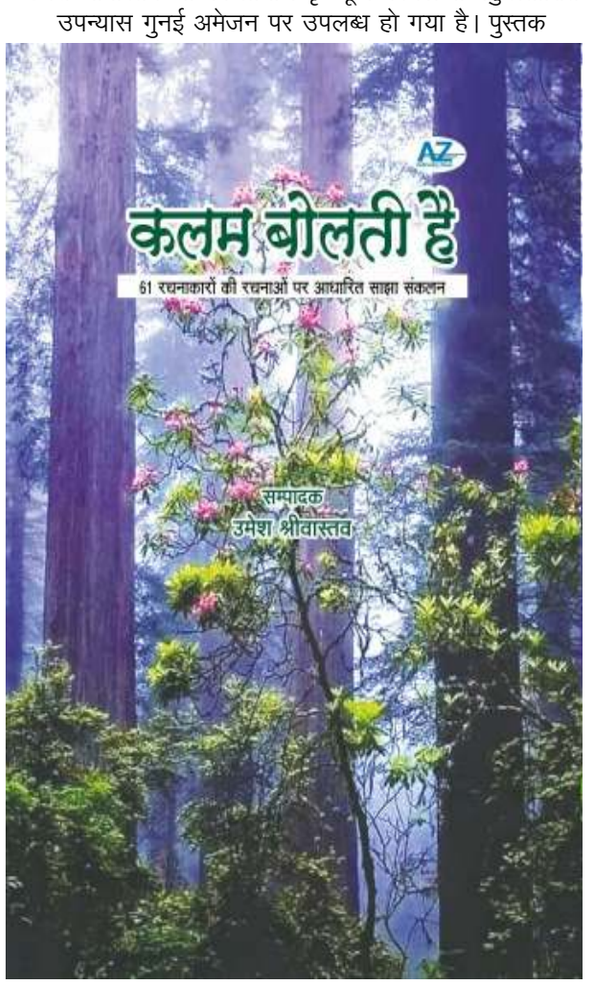

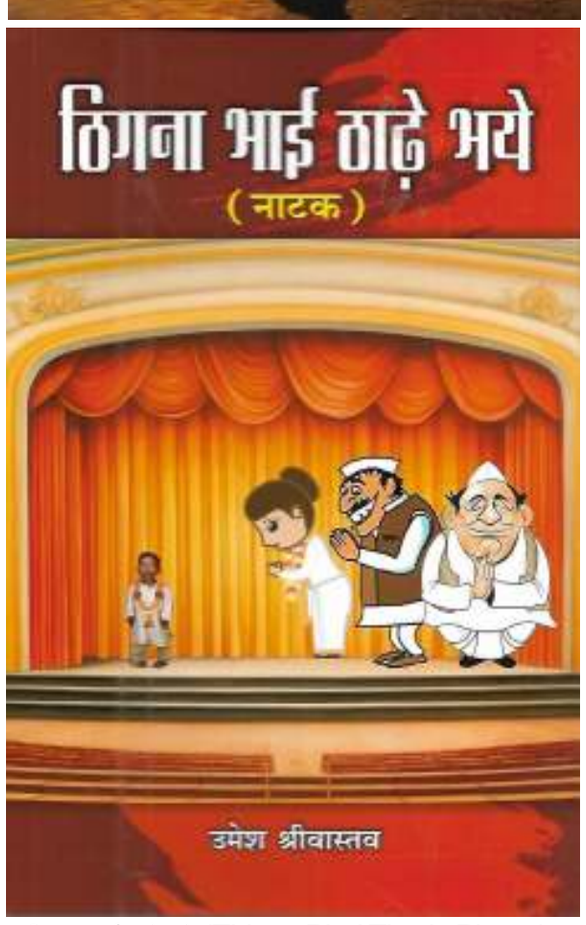

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

जिंदगी में सब खटा खट नहीं होता, मेहनत करनी पड़ती है...जिनेवा में जयशंकर का राहुल पर तगड़ा तंज

लोकसभा चुनाव 2024 में नेताओं की तरफ से अजीबोगरीब बयान खूब देखने सुनने को मिले। राहुल गांधी ने चुनाव प्रचार के दौरान खटाखट शब्द का इस्तेमाल किया। उन्होंने गरीबों के खाते में एक–एक लाख रुपये डालकर खटाखट गरीबी खत्म करने की बात कही थी। वहीं अब भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि किसी को कड़ी मेहनत करने की जरूरत है और जीवन श्खटा–खटश नहीं है। जिनेवा में भारतीय समुदाय से बात करते हुए जयशंकर ने पिछले 10 वर्षों में नरेंद्र मोदी सरकार द्वारा हासिल किए गए इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट पर प्रकाश डाला। अपनी टिप्पणी के दौरान विदेश मंत्री ने कांग्रेस नेता द्वारा की गई खटा खट वाली टिप्पणी का भी लाइटर नोट पर जिक्र किया। जयशंकर ने बयान के बाद दर्शक खूब हंस पड़े।

विदेश मंत्री ने इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के लिए जरूरी मैन पॉवर का जिक्र करते हुए कहा कि जब तक हम मानव संसाधनों का विकास नहीं करते हैं, जब तक आप बुनियादी ढांचे का निर्माण नहीं करते हैं, तब तक कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। आपके पास नीतियां होनी जरूरी होती हैं। जिंदगी श्खटा–खटश नहीं है। जीवन कठिन परिश्रम का दूसरा रूप है। जयशंकर ने कहा कि जिस किसी ने भी नौकरी की है और काम किया है, वह इसे जानता है। इसलिए यह मेरा आपके लिए संदेश है कि हमें इस पर कड़ी मेहनत करनी होगी। लोकसभा अभियान के हिस्से के रूप में एक चुनावी रैली के दौरान राहुल गांधी ने वादा किया था कि अगर उनकी पार्टी जीतती है, तो वे देश के हर गरीब परिवार की एक महिला के खाते में 1 लाख रुपये स्थानांतरित करेंगे। इस दौरान उन्होंने कहा था कि ट्रांसफर खटा–खट यानी तुरंत हो जाएगा।

बता दें कि जयशंकर 12–13 सितंबर तक दो दिवसीय यात्रा पर स्विट्जरलैंड में थे। यात्रा के दौरान, उन्होंने जिनेवा में स्थायी मिशन में भारतीय समुदाय एक बड़ी सभा के साथ बातचीत की। उन्होंने भारत द्वारा की गई तीव्र प्रगति और दुनिया के साथ जुड़ने के भारत के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला।

बुल्गारिया में अभ्यास के दौरान सैन्य विमान दुर्घटनाग्रस्त, दोनों पायलटों की मौत

बुल्गारिया का एक सैन्य विमान देश के नाटो में शामिल होने की वर्षगांठ के अवसर पर शुक्रवार को आयोजित एयरशो के एक

अभ्यास के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में सवार दोनों पायलटों की मौत हो गई। यह जानकारी अधिकारियों ने दी।

रक्षा मंत्रालय ने बताया कि एल–39 अल्बाट्रोस प्रशिक्षण जेट दोपहर के कुछ समय बाद दक्षिण–पश्चिमी बुल्गारिया में ग्राफ इग्नाटिवो एयरबेस के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जो राजधानी सोफिया से लगभग 150 किलोमीटर दूर स्थित है।

इस दुर्घटना के कारण जमीन पर आग लग गई। अधिकारियों का कहना है कि आग पर काबू पाने के प्रयास जारी हैं और दुर्घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है। प्रधानमंत्री ग्लेवचेव के प्रेस विभाग की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि वह एयरबेस के लिए रवाना हो रहे हैं। सरकारी समाचार एजेंसी बीटीए के अनुसार, बुल्गारिया शनिवार को अपनी नाटो सदस्यता की 20वीं वर्षगांठ मना रहा है और मिग–29 को बुल्गारियाई वायुसेना में शामिल किए जाने के 35 साल भी पूरे हो रहे हैं। दुर्घटना के बाद रक्षा मंत्री अतानास जैप्रियानोव ने एयरशो रद्द कर दिया। सरकारी प्रसारक बीएनटी के वीडियो में एयरफील्ड के ऊपर काले धुएं का एक बड़ा गुबार उठता हुआ दिखाई दे रहा है तथा दमकल गाड़ियां दुर्घटनास्थल की ओर भागती दिख रही हैं।

सिंध प्रांत में जहर मिला दूध पीने से एक ही परिवार के 13 लोगों की मौत

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में जहर मिला दूध पीने से एक ही परिवार के 13 लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना 19 अगस्त को खैरपुर के पास हैबत खान ब्रोही गांव में हुई। पीड़ितों की पहचान गुल बेग

ब्रोही, उनकी पत्नी, पांच बेटे, तीन बेटियां और तीन अन्य रिश्तेदारों के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि कुछ करीबी रिश्तेदारों ने आशंका जताई थी कि पीड़ितों को जहर दिया गया होगा क्योंकि परिवार के मुखिया का कुछ लोगों के साथ जमीन का विवाद था। पुलिस ने बताया कि सक्कूर स्थित रासायनिक प्रयोगशाला द्वारा की गयी जांच से पता चला है कि जिस दिन परिवार के सदस्यों की मौत हुई, उस दिन उन्होंने जो दूध पिया था, उसमें जहरीला पदार्थ था। उसने बताया कि रिपोर्ट में मृतकों के शरीर में जहरीले पदार्थ की मौजूदगी की भी पुष्टि हुई है। खैरपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) डॉ. समीउल्लाह सूमरो ने कहा कि पुलिस मामले की हर कोण से जांच कर रही है। उन्होंने कहा, ''हम सावधानी से मामले में आगे बढ़ेंगे लेकिन यह सुनिश्चित करेंगे कि घटना के जिम्मेदार लोगों को न्याय के कठघरे में लाया जाए।

सुनीता विलियम्स की अंतरिक्ष से प्रेस कॉन्फ्रेंस

वाशिंगटन। सुनीता विलियम्स को अंतरिक्ष में फंसे कई महीने हो चुके हैं और अब वो अगले साल धरती पर वापस लौटेंगी। इस बीच उन्होंने अपने साथी एस्ट्रोनॉट बुच विल्मोर के साथ पहली बार प्रेस कॉन्फ्रेंस की। मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने कई सवालों के जवाब दिए और अपने दिल की बात भी कही। सुनीता ने बातचीत के दौरान कहा कि मैं यहां फंसी और ऑर्बिट में कई महीने बिताना मुश्किल तो था, लेकिन मुझे स्पेस में रहना काफी पसंद है। उन्होंने ये भी कहा कि मैं अपनी मां के साथ कीमती समय बिताना चाहती थी, लेकिन एक ही मिशन में दो अलग–अलग यान में रहकर अच्छा लग रहा है। उन्होंने कहा कि हम टेस्टर हैं और यही हमारा काम है। सुनीता विलियम्स ने आगे कहा कि हम स्टारलाइनर को पूरा करना चाहते थे, लेकिन आपको पेज बदलना ही होगा और अगले अवसर को तलाशना ही होगा। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि वो एक साल तक स्पेस में रहेंगी, लेकिन उन्हें पता था कि वापसी में देरी हो सकती है। उन्होंने कहा कि इस पेशे में ऐसा होता रहता है।

US Election को लेकर पोप फ्रांसिस ने कर दी बड़ी अपील, ट्रंप और कमला हैरिस दोनों को खूब सुनाया

अमेरिका में 5 नवंबर को राष्ट्रपति का चुनाव होना है। रिपब्लिकन डोनाल्ड ट्रंप और डेमोक्रेटिक कमला हैरिस के बीच मुकाबला है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस धार्मिक सद्भाव के लिए सबसे लंबी यात्रा पर निकले पोप फ्रांसिस के निशाने पर आ गए। पोप फ्रांसिस ने दोनों की जमकर आलोचना की है। इमीग्रेशन और अबॉर्शन पर नीतियों को लेकर अमेरिकी वोटरों को नसीहत दी है। मतादाओं से पोप ने कहा कि आप कम शैतानी उम्मीदवार को वोट दें और राष्ट्रपति चुनें। अर्जेंटीना के पोप ने आप्रवासियों को निर्वासित करने की योजना पर ट्रम्प की और गर्भपात अधिकारों के समर्थन पर हैरिस के स्टैंड को लेकर दोनों को ही आड़े हाथों लिया।

सिंगापुर से रोम लौटते वक्त पोप ने कहा कि दोनों ही जीवन के खिलाफ हैं, चाहे वह प्रवासियों को बाहर करना हो या बच्चों को मारना। प्रवासियों के लिए दरवाजे बंद करने को पोप फ्रांसिस ने गंभीर पाप बताया। इसके साथ ही उन्होंने गर्भपात को हत्या के समान ठहराया। उन्होंने विस्तार से बताए बिना कहा कि अमेरिकी कैथोलिकों को नवंबर में मतदान करते समय कम बुरे उम्मीदवार को वोट करने की अपील की।

पोप ने सिंगापुर की अपनी यात्रा के अंतिम दिन कैथोलिक

जूनियर कॉलेज के युवाओं के साथ एक अंतर–धार्मिक बैठक के दौरान कहा कि क्या आलोचना करने का आपमें साहस है और क्या इसके साथ–साथ आप अपनी आलोचना किये जाने की अनुमति देंगे? पोप ने कहा कि युवाओं के बीच संवाद समुदाय में व्यापक स्तर पर नागरिकों के बीच बातचीत को बढ़ावा देगा। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि आलोचना रचनात्मक या व्यवधान डालने वाली हो सकती है और युवाओं को आलोचना करने के दौरान विभिन्न धर्मों के लोगों का सम्मान करना चाहिए।

बांग्लादेश के हिंदुओं पर सवाल करना राहुल गांधी की टीम को नहीं भाया, अमेरिका में जर्नलिस्ट के साथ कर दी ऐसी शर्मनाक हरकत

कांग्रेस नेता राहुल गांधी का अमेरिका दौरा देश में चर्चा का मुद्दा बना रहता है। लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के बाद राहुल गांधी का ये पहला अमेरिकी दौरा है। राहुल जब भी विदेश जाते हैं तो देश में विवादों की आंधी आ जाती है। अब ताजा मामला पत्रकार से बदसलूकी का है। बताया जा रहा है कि पत्रकार की गलती बस इतनी थी कि उसने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के बारे में राहुल से सवाल कर दिया। बस क्या था राहुल के समर्थकों ने पत्रकार का फोन तक उससे छीन लिया। सारी कहानी खुद पत्रकार ने साझा की है। दरअसल, इंडिया टुडे के वाशिंगटन स्थित संवाददाता रोहित शर्मा ने हैरतअंगेज खुलासा करते हुए जानकारी दी कि टेक्सास के डलास में राहुल गांधी की टीम द्वारा उन पर कैसे अटैक किया गया। पत्रकार ने दावा किया कि राहुल गांधी के सहयोगियों ने उनका फोन तक छीन लिया और बांग्लादेशी हिंदुओं पर हमलों के बारे में पूछे गए सवाल के फुटेज को जबरन डीलिट करने के लिए मजबूर किया। राहुल

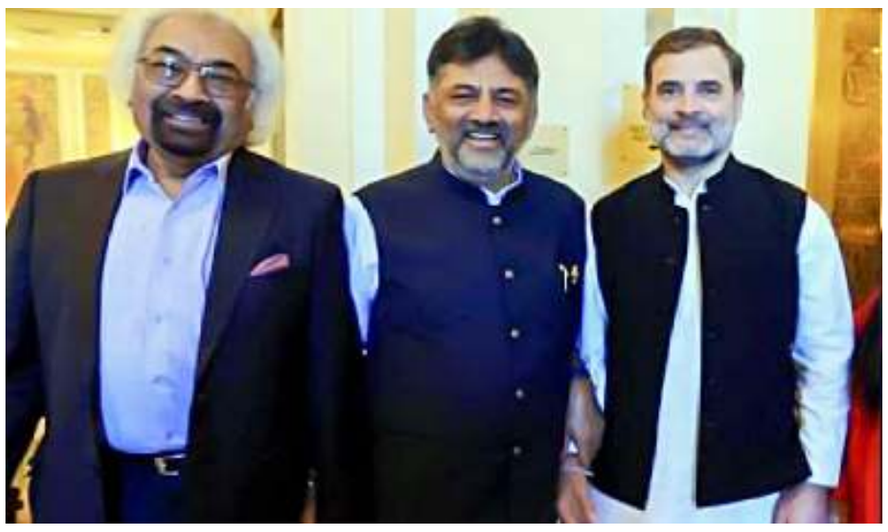

गांधी की टीम का एक पत्रकार पर आक्रामक होना ऐसे समय में सामने आया है जब वह भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के स्तर में गिरावट के बारे में बात कर रहे हैं।

बीजेपी के मीडिया सेल के हेड अमित मालवीय ने पूरी घटना का ब्यौरा अपने एक्स अकाउंट पर शेयर करते हुए कहा कि ये देखना दिलचस्प होगा कि क्या इंडिया टुडेध्आजतक इसे एक बड़ा मुद्दा बनाते हैं और अपने पत्रकार पर हमले को उजागर करने के लिए अपने मंच का उपयोग करते हैं।यह देखना भी उतना ही दिलचस्प होगा कि राजदीप सरदेसाई जैसे कांग्रेस के धुरंधर इसे प्राइम टाइम पर लेते हैं या नहीं। बेरोजगार कांग्रेस की ओर झुकाव रखने वाले यूट्यूब पत्रकारों की चुप्पी स्पष्ट है। लेकिन क्या प्रेस क्लब ऑफ इंडिया और अन्य मीडिया व्यस्त निकाय एक साथी पत्रकार पर आक्रामकता के इस कृत्य के लिए राहुल गांधी और कांग्रेस की निंदा करेंगे?

गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव के वक्त विपक्ष ने एक नैरेटिव चलाया था कि बीजेपी सत्ता में आई तो संविधान बदल कर आरक्षण खत्म कर देगी, और ये बात चुनावी मुद्दा बन गई। विपक्ष के नेता राहुल गांधी लगातार दोहरा रहे हैं कि संविधान की वो हर कीमत पर रक्षा करेंगे। हर चुनावी रैली में संविधान की कॉपी लेकर भाषण दिया। यहां तक की वो सांसद के तौर पर शपथ लेने गए तो उस वक्त भी उनके हाथों में संविधान की कॉपी नजर आई। लेकिन लोकतंत्र बचाने की बात करने वाले राहुल की टीम की तरफ से इस तरह की घटना सामने आने के बाद बीजेपी भी कई सवाल खड़े कर रही है।

पाकिस्तान में मकान की छत ढहने से एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत

पाकिस्तान के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में आंधी–तूफान के कारण शुक्रवार देर रात एक मकान की छत ढहने से तीन बच्चों समेत एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि चारसद्दा जिले के तुरंगजई गांव में भीषण तूफान आने से यह हादसा हुआ। इस दुर्घटना में एक दंपति और उनके तीन बच्चों की मौत हो गई। उसने बताया कि स्थानीय लोगों और बचावकर्मियों ने शवों को मलबे से निकाला और उन्हें पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल ले जाया गया। खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री के.पी.के अली अमीन ने घटना पर दुख जताया और पीड़ित परिवार को नकद मुआवजा देने की घोषणा की।

संक्षिप्त समाचार

अल्बर्ट आइंस्टीन का लेटर 32 करोड़ रुपये में नीलाम, पहले परमाणु बम के बारे में लिखी थी चेतावनी

अल्बर्ट आइंस्टीन की तरफ से हस्ताक्षरित लेटर की एक प्रति, जिसने पहले परमाणु बम के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसे 32 करोड़ रुपये में नीलाम कर दिया गया था

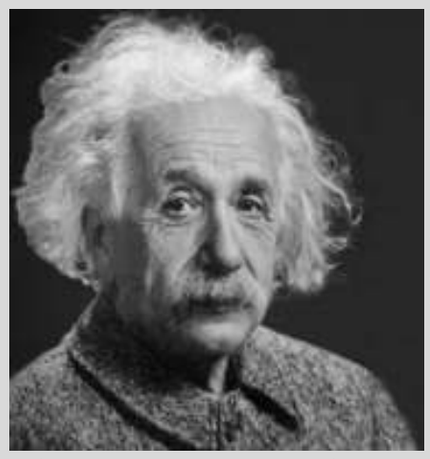

1939 में अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट को संबोधित लेटर में परमाणु हथियारों की क्षमता के बारे में चेतावनी दी गई थी और अमेरिका से अपनी स्वंय की रिसर्च शुरू करने का आग्रह किया गया था, जिससे अंततः द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान परमाणु बम का निर्माण हुआ। यह पत्र अब न्यूयॉर्क में फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट की लाइब्रेरी से मिला। ये पत्र न्यूयॉर्क में फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट लाइब्रेरी के कलेक्शन का हिस्सा है, ऐसे में आइंस्टीन का राष्ट्रपति रूजवेल्ट का इस संभावना के प्रति सचेत करने का प्रयास था कि जर्मनी परमाणु हथियारों पर काम कर सकता है। लेटर में, आइंस्टीन ने परमाणु फिजिक्स में हुए विकास पर भी जोर दिया, जिसमें कहा गया कि यूरेनियम को ऊर्जा के एक नए और महत्वपूर्ण स्रोतष में बदला जा सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि इस ऊर्जा का उपयोग ष्अत्यंत शक्तिशाली बमष बनाने के लिए किया जा सकता है। आइंस्टीन, जो एडॉल्फ हिटलर के सत्ता में आने के कारण साथी भौतिक विज्ञानी लियो स्जीलार्ड के साथ यूरोप भाग गए थे, ने कार्रवाई करने की तत्काल आवश्यकता महसूस की। उनके पत्र ने अमेरिकी सरकार को परमाणु विखंडन में अपने अनुसंधान में तेजी लाने के लिए राजी करने में मदद की, जिससे मैनहट्टन परियोजना और अंततः परमाणु बमों का विकास हुआ।

बेपनाह प्यार में डूबी महिला ने एक्स शख्स का जीना किया मुहाल

ब्रेकअप के बाद अक्सर ब्वॉयफ्रेंड और गर्लफ्रेंड एक–दूसरे के साथ बात तक करने से परहेज करते हैं। हालांकि घोस्टिंग चलती रहती है। वहीं, ब्रेकअप के अक्सर बाद लड़की हो या लड़का, दोनों नए जोड़ीदार की तलाश में जुट जाते हैं, लेकिन एक महिला ने अपने डेंटिस्ट ब्वॉयफ्रेंड से ब्रेकअप के बाद एक 54 साल के डेविड पैग्लिरो के प्यार में पड़ गई। प्यार में वो इतना बेताब हो चुकी थी कि उसने डेविड पैग्लिरो का जीना मुहाल कर दिया। द मिरर की रिपोर्ट के अनुसार, पत्नी के निधन के बाद डेविड पैग्लिरो काफी परेशान हो गए थे। वो एक साथी की तलाश कर रहे थे। तभी पग्लिरो की मुलाकात नर्स, सोफी कोलविल से हुई। पहले दोनों के बीच रिश्ते काफी सामन्य थे। इसके बाद सोफी ने डेविड का हर जगह पीछा करना शुरू कर दिया। सोफी ने डेविड को एक दिन में 1,000 कॉल कर दिया। इतना ही नहीं डेविड पैग्लिरो की कार में उसने ने एक ट्रैकिंग डिवाइस भी लगा दी। वहीं, महिला डेविड के लगभग 14 करोड़ की संपत्ति वाले मकान में जबरन दाखिल हो गई और बेडरूम में उसका इंतजार करने लगी। अंत में यह मामला अदालत जा पहुंचा। सोफी कोलविल को अदालत ने दोषी करार दिया।

'चिकन नेक काट दूंगा' बांग्लादेशी आतंकी ने भारत के खिलाफ उगला जहर

शेख हसीना सरकार गिरने के बाद बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ लगातार हमले हो रहे हैं। कई कट्टरपंथी नेता और आतंकवादी, हिंदू समुदाय के लोगों को निशाना बना रहे हैं। इसी बीच एक भारत के खिलाफ जहर उगल रहे बांग्लादेशी आतंकवादी का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे है।आतंकवादी का नाम जशीमुद्दीन रहमानी है। यह आतंकी संगठन अलकायदा का समर्थन करता है। वो अंसारुल्लाह बांग्ला टीम का नेता भी है। जशीमुद्दीन रहमानी वीडियो में कहता हुआ सुनाई दे रहा है,'चिकन नेक काट देंगे, जम्मू कश्मीर को आजाद कराएंगे, बंगाल को भारत से अलग कराएंगे और खालिस्तानियों को समर्थन करेंगे। बता दें कि सिलीगुड़ी कॉरिडोर को भारत का चिकन नेक कहते हैं। यह उत्तर पूर्व को भारत के बाकी हिस्सों से जोड़ता है। यह एक संकीर्ण भू–राजनीतिक और भू–आर्थिक गलियारा है, जो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को बाकी हिस्सों से जोड़ता है। यह गलियारा 60 किलोमीटर लंबा और 20 किलोमीटर चौड़ा है। इस कॉरिडोर के इर्द–गिर्द नेपाल और बांग्लादेश हैं। जशीमुद्दीन रहमानी ने वीडियो में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से एक अनुरोध किया है। उसने कहा है कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अलग शासन की घोषणा करें। बांग्लादेश मेंअंतरिम सरकार बनने के बाद जशीमुद्दीन रहमानी जेल से बाहर आया है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।